कुरुक्षेत्र

काश्मीर में धान का एक खेत

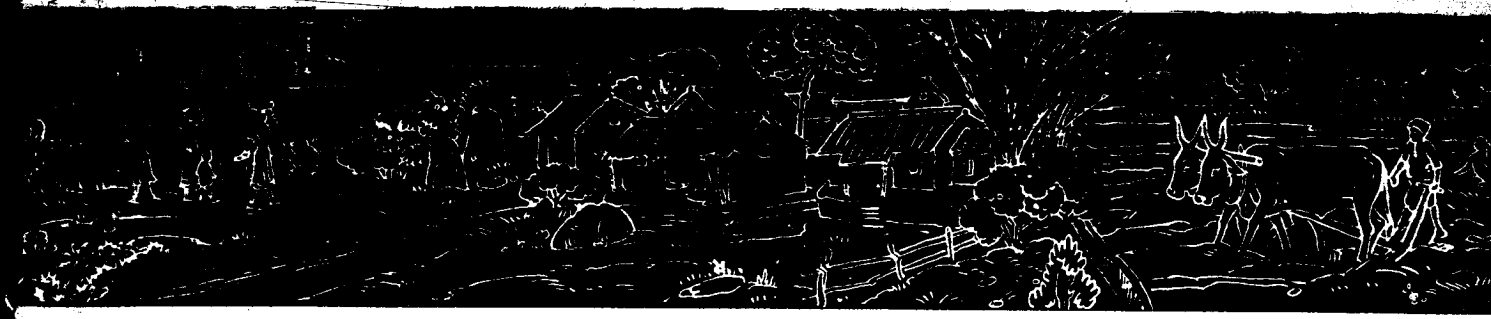

मज़दूर मंज़िल

कुरुक्षेत्र

सामुदायिक योजना प्रशासन का मुखपत्र

वर्ष १] नवम्बर १९५५ [अंक १

विषय-सूची

आवरण चित्र	सुशील सरकार	
शुभागमन [व्यंग्य-चित्र]	सैमुअल	२
राष्ट्रपति का आशीर्वाद	...	३
भारत की आज़ादी के आठ वर्ष	जवाहरलाल नेहरू	४
पावन चप्पलें [संस्मरण]	चक्रवर्ती राजगोपालाचारी	६
जनता और हमारा भविष्य	'कृषिपुत्र'	८
विकास का प्रतीक : सोनीपत	बी० जी० वर्गीज़	९
सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय विस्तार सेवा	वी० टी० कृष्णमाचारी	१२
भाग्य जागे ! [कहानी]	उमाशंकर श्रीवास्तव	१३
सामुदायिक योजनाओं की प्रगति [चित्रावली]	...	१५-१८
फतेहपुर बेरी में महिला शिविर	सावित्रीदेवी वर्मा	१९
धरती की पुकार [कविता]	प्रयागनारायण त्रिपाठी	२२
भारत में सामुदायिक विकास कार्यक्रम	...	२३
तिरंजण	प्राणनाथ सेठ	२५
इतिहास के पृष्ठ [व्यंग्य-चित्र]	सैमअल	२८
हमारी रथयात्रा	डी० सी० दुबे और पी० एस० लाम्बा	२९

★

सम्पादक :

केशवगोपाल निगम

[सहकारी सम्पादक, प्रकाशन विभाग]

उप-सम्पादक : मनोहर जुनेजा

★

शुभागमन

हमारी अनेक विधान सभाओं की कार्रवाई राष्ट्र भाषा में होती है
अ आ
क ख ग
आ + ज = आज
स्कूलों में यह एक अनिवार्य विषय है
तार
अब तार भी राष्ट्र भाषा में भेजे जाते है
दिल्ली
स्टेशनों के नाम भी राष्ट्र भाषा में लिखे जाने लगे
आराम हराम है
गन्दा रहना पाप है
Samuel
हमारी सामुदायिक योजनाओं के नारे भी राष्ट्र भाषा में
कुरुक्षेत्र
और अब 'कुरुक्षेत्र' भी राष्ट्र भाषा में प्रकाशित होने लगा।

राष्ट्रपति का आशीर्वाद

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली।

२३ सितम्बर, १९५५।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि सामुदायिक योजना का मुखपत्र "कुरुक्षेत्र" अब हिन्दी में भी निकलने जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत जो कार्य हो रहा है वह अधिकतर देहातों में ही है और ग्रामों में अधिकांश लोग हिन्दी ही बोलते और समझते हैं। इसलिए इस पत्रिका की उपादेयता असन्दिग्ध है। मुझे आशा है कि हिन्दी "कुरुक्षेत्र" के द्वारा सामुदायिक योजना के कार्यक्रम में जन-साधारण की अधिक रुचि पैदा हो सकेगी और कार्यकर्ताओं के लिए भी प्रचार आदि का कार्य अधिक सुगम हो जाएगा।

राजेन्द्र प्रसाद

भारत की आज़ादी के आठ वर्ष

जवाहरलाल नेहरू

भारत को आज़ादी मिले आठ साल हुए हैं। ये आठ साल हम सबके लिए मुश्किलों के साल थे। इस दौरान में हम बहुत कुछ कर चुके हैं और बहुत कुछ करना बाकी है। हमने गल्तियाँ भी बहुत की हैं लेकिन गिरते पड़ते, सबक सीखते आगे बढ़ते ही रहे हैं। एक शायर के शब्दों में—

इस तरह तय की हैं हमने मंज़िलें,
गिर पड़े, गिर कर उठे, उठ कर चले।

और शायद यही सबसे अच्छा तरीका भी है, क्योंकि सिर्फ़ व्यक्तिगत अनुभव से ही कोई इन्सान या कोई कौम आगे बढ़ सकती है। भाग्यवश आसानी से मिलनेवाली कामयाबी से हमें वह अनुभव और शिक्षा (ट्रेनिंग) नहीं मिल पाती, जो मिलनी चाहिए। हर कीमती चीज़ को पाने के लिए हमें कुछ कीमत देनी पड़ती है—भाग्यवश और आसानी से मिली हुई आज़ादी, आसानी से छिन भी सकती है। सिर्फ मुश्किल से मिलनेवाली कामयाबियों की ही कुछ क़दर है। सिर्फ वे ही टिकनेवाली हैं।

हिन्दुस्तान की आज़ादी की बुनियाद में वह बिलकुल नहीं है, जो सन् १९४७ के आखिर में हुआ था। हमारी आज़ादी के पीछे तो ट्रेनिंग और अनुभव है, वे त्याग और बलिदान हैं, जो हमने पिछले तीस से भी ज्यादा सालों में किए हैं। नई पीढ़ी के कुछ लोग इस बात को नहीं समझते। उनका ख्याल है कि कामयाबी आसानी से, बग़ैर उस ट्रेनिंग के और कीमत दिए बिना मिल सकती है। जिस क्षण हमें आज़ादी मिली तभी हमने महसूस किया कि आज़ादी हमारे लम्बे सफ़र की केवल एक मंज़िल ही है। आराम करने के लिए वक्त नहीं था, उसी दम हमें बड़ी-बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। यह बात हमसे छिपी हुई नहीं थी कि आज़ादी के साथ-साथ हमारे सामने आर्थिक समस्याएँ भी आ खड़ी होंगी। लेकिन अचानक हम पर बटवारे और उससे पैदा होनेवाली मुश्किलों का पहाड़ टूट पड़ा। जिस इन्सान ने भी उन डरावने दिनों को देखा है, जब उजड़े बेघर दुखियारे इन्सानों के काफिलों पर काफिले चले आते थे, वह जिन्दगी भर उनको नहीं भूल सकता। इस इन्तहाई मुश्किल का सामना भी हमने मजबूती से किया, हालांकि हमारा दिल दुख से टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता था। उस वक्त हमारी खुशकिस्मती थी कि हमको ताकत, हौसला और उम्मीद देने वाला हमारा नेता मौजूद था। हमें ख्वाब में भी ख्याल नहीं था कि वह हमें जल्दी ही छोड़ जाएगा। कुछ ही महीने बाद हमारे देश पर दुखों का एक और पहाड़ टूटा। वह नेता, जिसने हमें आज़ादी दिलवाई थी, हममें नियन्त्रण पैदा किया था, हमें ट्रेनिंग दी थी, एक हत्यारे की गोली का शिकार हो गया। एक बार फिर, आँखों में आँसू और दिल में टीस लिए, हमने अपने दिल को मज़बूत किया और अपनी मुश्किलों से लड़ने के लिए कमर कस ली।

लाखों लोगों का इधर से उधर आना-जाना हमारे लिए एक बड़ा इम्तिहान था। इससे भी नए-नए सबक मिले, उनको जिनके घर उजड़े थे और उनको भी जो इन दुखियारों की मदद करना चाहते थे।

इन अनेक अनुभवों में से एक नीलोखेड़ी का अनुभव था। नीलोखेड़ी ही से सामुदायिक संगठन और केन्द्रों के विचार का जन्म हुआ। और जगहों पर भी परीक्षण किए गए थे, लेकिन वह और ढंग के थे। इटावा और फरीदाबाद की गिनती इन्हीं में होती है। लेकिन नीलोखेड़ी सामुदायिक विकास कार्य का मूल प्रतीक बन गया।

इससे सामुदायिक विकास योजना संगठन और आगे चलकर राष्ट्रीय विस्तार सेवा का जन्म हुआ। मेरा ख्याल है कि इन कुछ सालों में, हिन्दुस्तान इन्सानी कोशिशों के अनेक क्षेत्रों में कामयाब होने का दम भर सकता है। मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान के फैले हुए देहाती इलाकों में सामुदायिक विकास और राष्ट्रीय विस्तार सेवा कार्यक्रम का विस्तार, देश की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। यह कहना गलत न होगा कि पहली बार हम अपनी देहाती समस्याओं को वास्तविक ढंग से हल करने की कोशिश कर रहे हैं। यह सब लोगों पर ऊपर से थोंप कर नहीं किया जा रहा है, बल्कि इनमें खुद अपनी मुश्किलों को हल करने की इच्छा पैदा करके किया जा रहा है। इस कार्यक्रम ने लोगों में नई जान डाल दी, उनकी आँखें चमक उठीं, उनके हाथ खुदबखुद उठ गए और उनके बाजुओं में शक्ति आ गई। लोगों में जोश की एक लहर दौड़ गई।

अब तक यह कार्यक्रम ग्रामीण भारत के पाँचवे हिस्से से अधिक भाग में पहुँच चुका है। इस महान् देश के हर दूरस्थ गाँव और पुरवा में इस सन्देश को पहुँचाने का फैसला किया गया है।

राष्ट्रीय विस्तार सेवा वह मूल संगठन है जिसका विकास हम सारे देश में कर रहे हैं। लेकिन यह सिर्फ बुनियाद है जिस पर सामुदायिक विकास कार्यक्रम की जीती-जागती इमारत खड़ी की जाएगी। सामुदायिक कार्यक्रम के बिना राष्ट्रीय विस्तार सेवा बेजान होकर एक रोज़मर्रा की बात बन कर रह जाएगी। इसलिए यह ज़रूरी हो गया कि इन दोनों कार्यक्रमों का विकास किया जाए और सामुदायिक कार्यक्रम को देश भर में फैलाया जाए। जिन इलाकों में सामुदायिक कार्यक्रम का प्रसार नहीं हुआ है, उनके लिए भी एक नमूना पेश किया जाए।

ऐसी उम्मीद थी कि दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक देश भर में सामुदायिक योजनाओं और राष्ट्रीय विस्तार सेवा केन्द्रों का जाल बिछाने का कार्य खत्म हो जाएगा। यह एक बड़ा काम था क्योंकि इसके लिए बहुत से लोगों को ट्रेनिंग देना ज़रूरी था। अब भी आशा है कि इस मियाद में हम यह काम खत्म कर लेंगे।

सामुदायिक योजनाओं के मूल महत्व को देखते हुए, जो लोग उनसे या राष्ट्रीय विस्तार सेवा से सम्बन्धित हैं, वे सामुदायिक योजनाओं के प्रसार के लिए उत्सुक थे ताकि आधा क्षेत्र योजनाओं के अन्तर्गत आ जाए, अर्थात् कुल का आधा भाग। रास्ते में आनेवाली मुश्किलों की ओर ध्यान दिलाया गया और काफी वाद-विवाद के बाद यह फैसला किया गया कि हमारा लक्ष्य कम से कम चालीस फीसदी इलाके में सामुदायिक योजनाओं की स्थापना करना हो। हाल ही में राष्ट्रीय विकास परिषद ने यह फैसला किया है और हमें अब ऐसे ही काम करना है।

इस तरह हमें सारे हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय विस्तार सेवा का प्रसार करना है, जिसमें से कम से कम ४० फीसदी सामुदायिक योजनाएँ होगी। मुझे उम्मीद है कि इस महान् कार्य में हमें सफलता मिलेगी।

हिन्दुस्तान का ढाँचा बदलने के लिए की जानेवाली कोशिश में विभिन्न ओहदों पर काम करनेवाले अनगिनत लोगों को मैं शुभ कामनाएँ भेजता हूँ। अब तक कई मुल्कों की निगाहें हमारे इस कार्यक्रम की तरफ जा चुकी हैं। लेकिन हमारे लिए इससे बढ़ कर महत्वपूर्ण बात यह है कि इससे हमारे गाँवों में बसनेवाले लोगों को ज़िन्दगी मिली है और इस ज़िन्दगी से कई नई चीज़ें पैदा हो सकती हैं।

पावन चप्पलें

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

मणियानूर गाँव में हमारा एक अकाल सहायता केन्द्र है। इसके निवासी हरिजनों में प्रायः सभी भुखमरे मोची हैं। मणियानूर की साप्ताहिक पैंठ में दूर-दूर के गाँवों से लोग आते हैं और इसी कारण अधिकारियों ने अपने नियमानुसार यहाँ एक देसी शराब की और एक ताड़ी की बड़ी दुकान खुलवा दी है। इन दोनों दुकानों का धन्धा बहुत अच्छा चलता है। इस वर्ष तक जब कि हमारा सहायता कार्य आरम्भ हुआ, हमारे इन मोचियों की छोटी-छोटी गृहस्थियों पर भी ताड़ी की दुकान की शनि दृष्टि पड़ चुकी थी। फिर हमारे कहने पर सभी ने पूरी तरह मद्यनिषेध का प्रण लिया और उन्होंने उसे पूरी तरह निभाया भी।

गत बृहस्पतिवार को मुनियन मेरी झोंपड़ी में आया। उसके साथ गाँव के अन्य मोची भी थे। बृहस्पतिवार को वे आश्रम से आधी दर पर अनाज लिया करते थे।

"क्या बात है?" मैंने पूछा।

"कुछ नहीं, कुछ लोगों ने ताड़ी पी है और हम आप से सलाह लेने आए हैं।"

मैं विभिन्न संस्थाओं को जानेवाली चिट्ठियों में उलझा हुआ था। मैंने बड़ी खीज से कहा—"यदि तुम ताड़ी के लिए पैसे खर्च कर सकते हो तो इसका मतलब है कि बाज़ार की दर पर तुम अपने लिए अनाज भी खरीद सकते हो, ऐसी अवस्था में हमें सहायता बन्द कर देनी चाहिए। अगर तुम्हारी इच्छा पीने की ही है तो पियो।"

मैंने सोचा कि यह बात उन्हें जता देनी चाहिए कि शराब छोड़ कर वे किसी और का नहीं अपना ही उपकार कर रहे हैं।

"अपराधी कौन-कौन हैं?" मैंने पूछा।

"दो व्यक्ति," मुनियन ने उत्तर दिया।

"क्या वे यहाँ उपस्थित हैं?"

"उनमें से एक यहाँ है। दूसरा अपना अनाज लेने आज नहीं आया। उसकी पत्नी आई है।"

"क्या इसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है?" मैंने पूछा।

"कल रात यह शराब पी कर घर लौटा और पत्नी से झगड़ने लगा। सारा गाँव इस बात को जानता है और इसे अपना अपराध मान लेना चाहिए," मुनियन ने कहा।

"तुम क्या कहते हो?" मैंने उस व्यक्ति से पूछा।

"यह सच है कि कल रात मैं अपनी पत्नी से झगड़ रहा था। परन्तु क्या एक पति का अपनी पत्नी से किसी अन्य बात पर भी झगड़ा नहीं हो सकता? क्या गृहस्थी में ऐसी बातें नहीं होती रहतीं?"

"मुझे तो तुम यह बताओ कि क्या तुमने ताड़ी पी या यह इल्ज़ाम झूठा है? अगर तुममें से एक भी व्यक्ति ताड़ी की दुकान पर पैसे खर्च करता है, तो हमें सारे गाँव की सहायता बन्द कर देनी चाहिए," मैंने कहा।

"यह झूठ है," उस व्यक्ति ने कहा।

"आप लोग क्या कहते हैं?" मैंने अन्य व्यक्तियों से पूछा।

और उन सबने बताया कि झगड़े की बात सच है, परन्तु शराब पीने के बारे में हम कुछ नहीं जानते।

"तब मुनियन ने तुम्हारे विरुद्ध इल्ज़ाम क्यों लगाया

है ?" मैंने उस व्यक्ति से पूछा—"क्या तुम्हारी उससे कुछ अनबन है ?"

"हाँ, है," उसने कहा—"क्योंकि मैंने इस बात का भण्डा फोड़ दिया कि उन व्यक्तियों के कार्डों पर भी अनाज लिया जा रहा है जो कि पहाड़ियों पर काम करने के लिए गाँव से चले गए हैं।"

"क्या यह सच है?" मैंने मुनियन से पूछा।

"कृपया इस बूढ़े से पूछिए कि क्या इसके बेटे ने शराब नहीं पी थी ? यह बूढ़ा इसका बाप है और मेरे बाप का भाई भी है, इसलिए हम दोनों का ही बुज़ुर्ग है। इस पर ही निर्णय छोड़ दिया जाए।"

"अच्छा वृद्ध महाशय आप ही बताइए कि आपके लड़के ने शराब पी थी ?" मैंने उस वृद्ध से पूछा।

"यह सच है कि कल रात यह शोर-गुल मचा रहा था।"

"परन्तु क्या इसने ताड़ी पी रखी थी ?"

"नहीं, इसने ताड़ी नहीं पी थी, यह बस झगड़ रहा था और गुल मचा रहा था।"

"इसे क़सम दिला कर पूछिए," मुनियन ने कहा।"

"क्या तुम सब इस बूढ़े की क़सम पर विश्वास कर लोगे ?" मैंने पूछा और उन सब ने हाँ कर दी।

मैंने अपने मन में सोचा कि कहाँ और किस प्रकार क़सम दिलाई जाए। मेरे मन में ज़रा भी सन्देह नहीं था कि इससे समस्या का कोई हल निकल भी आएगा। बूढ़ा अपने पुत्र के समर्थन में कह ही चुका था और मैंने अपने मन में कहा···इस रस्मी कार्रवाई को पूरा कर मामले को खत्म करूँ। १८ वर्ष तक वकालत करने के बाद मेरे मन में क़समों और शपथों के लिए ज़रा भी तो विश्वास नहीं रहा है।

उनके व्यवहार और दोनों पक्षों के बयान सुन कर मेरा विश्वास इसी ओर झुक रहा था कि शराब पीने का इल्ज़ाम झूठा है और इस युवक का यह दोषारोपण शायद सत्य ही है कि अनुपस्थित व्यक्तियों के नाम पर अनाज लेने की चाल का भण्डा फोड़ना ही उसकी अप्रियता का मूल कारण है।

जब कि मैं इस प्रकार सोच रहा था, मेरी दृष्टि नीचे पड़ी चप्पलों पर गई। मैंने उस बूढ़े व्यक्ति को पास बुलाया।

"तुम सब चमड़े से ही रोज़ी कमाते हो, क्या नहीं ?" मैंने पूछा !

"हाँ," उस बूढ़े ने उत्तर दिया।

"यही वह चमड़ा है जो तुम्हें रोज़ी देता है। इसको अपने दोनों हाथों में लो," मैंने चप्पलों की ओर इशारा करते हुए कहा।

उसने चप्पलें उठा लीं।

"मेरे साथ-साथ कहो," मैंने कहा—"रोज़ी देनेवाले चमड़े पर हाथ रख कर और भगवान के सामने।"

उसने शब्द दोहराए।

"क्या तुम्हारे लड़के ने शराब पी थी ?" मैंने पूछा।

"हाँ, उसने पी थी," विस्फारित नेत्रों से मेरी ओर देखते हुए उस बूढ़े ने कहा।

यह सब देख कर मैं हक्का-बक्का रह गया। कभी-कभी चमत्कार भी होते ही हैं और इस घटना ने मुझे झकझोर कर रख दिया।

"क्या तुम भी क़सम खाओगे ?" मैंने अपराधी नवयुवक से पूछा। मेरा विचार था कि वह इंकार ही करता रहेगा।

उस नवयुवक ने चप्पलें हाथ में लीं और बोला—"हाँ, मैंने शराब पी थी।"

एक अविस्मरणीय कहानी पूरी हो चुकी थी।

हमने उस पर चार आने जुर्माना किया जो उसने तुरन्त अदा कर दिया और वह जुर्माना सहायता फंड में जमा कर दिया गया। मैंने सब आदमियों से एक-एक करके चप्पलें हाथ में लेकर ताड़ी न पीने की सौगन्ध खाने को कहा।

सामने मेरी पुरानी चप्पलें पड़ी थीं जिन्हें ये दरिद्र लोग पावन बना कर छोड़ गए थे। चप्पलें अपनी मूक भाषा में कह रही थीं···"विश्वास खो कर तुमने गलती की। सत्य और विश्वास समाप्त नहीं हो गए।"

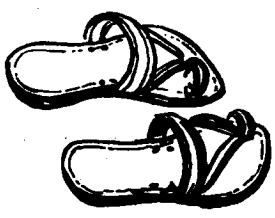

देसी चप्पलें किसी के पैरों के लिए एक उपयोगी वस्तु मात्र नहीं हैं। इनसे दरिद्र मोचियों का विश्वास और रोज़ी संबद्ध है। हमें ऐसी वस्तुओं का आदर करना चाहिए और उनका उचित ढंग से प्रयोग करना चाहिए।

जनता और हमारा भविष्य

सामुदायिक योजनाओं और राष्ट्रीय विस्तार सेवाओं का मूल उद्देश्य जनता में नवीन स्वतंत्र राज्य के प्रति उसके उत्तरदायित्वों और अधिकारों के लिए एक नवीन चेतना जगाना है। अपने वैयक्तिक स्वार्थों के कारण हम चाहे कुछ भी अर्थ लगा लें, परन्तु वास्तव में 'विकास' का कोई दूसरा अर्थ नहीं है।

प्राचीन समय में हमारा देश भी अन्य देशों की तरह बहुत समृद्ध था। संस्कृति और सभ्यता के उच्च शिखर पर विराजमान था। देश में एक प्रकार का सामुदायिक जीवन था, जहाँ लोग सामुदायिक रूप से श्रम करते थे और उसका फल प्राप्त करते थे। यह एक तथ्य है कि हम आज तक गीता अथवा उपनिषदों के लेखकों का नाम नहीं जान सके हैं। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्राचीन सन्त मौलिक होने का दम्भ नहीं भरते थे। ब्रह्म सत्य है, जगत मिथ्या—यह उनका विश्वास था और इसी के चारों ओर हमारे समस्त दर्शन का ताना-बाना बुना हुआ है।

मेरे यह सब कहने का एक विशेष कारण है। मैं देख रहा हूँ कि हमारे इस आन्दोलन में कुछ अवांछनीय तत्व उभर रहे हैं। यह आन्दोलन जनता द्वारा जनता के लिए चलाया गया था। एक प्रकार से यह मनुष्य के उस प्रारंभिक आन्दोलन का पुनरुज्जीवन था जो उसने पृथ्वी पर सबसे पहली बार छेड़ा था, केवल वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए थोड़ा फेर-बदल कर दिया गया है।

इस बात पर प्रसन्न होना चाहिए कि भगवान ने जगत के निर्माण में हमें यन्त्र रूप में चुना है। परन्तु हम में से कुछ अपने आप को ही कर्ता समझने की भूल कर रहे हैं। ऐसे लोग यह भूल जाते हैं कि इस आन्दोलन का श्रीगणेश तो पृथ्वी पर प्रथम मानव के पदार्पण के साथ ही हो गया था। गुड़गाँव, श्रीनिकेतन, इटावा, नीलोखेड़ी और फरीदाबाद तो उस प्रचीन आन्दोलन के नवीन संस्करण के कणमात्र ही हैं। मनु के चार सूत्रों के ढग के नारे क्षणिक आनन्द प्रदान कर सकते हैं, परन्तु ये नारे श्रम और पसीने का स्थान नहीं ले सकते।

कभी-कभी तय की हुई मंज़िल पर एक नज़र डालने से बाकी मंज़िल तय करने के लिए खोया साहस लौट आता है। परन्तु आगे बढ़ते हुए पीछे की सोचना कोई अच्छी बात नहीं। क्योंकि इसका अर्थ या तो निष्क्रियता की अवस्था आ जाना है या बेध्यानी में चोरों के लिए मैदान साफ़ छोड़ देना है। हमारे कार्यक्रम की वर्तमान अवस्था में 'सन्तोष' प्रथम नम्बर का शत्रु है। यहाँ मेरा अभिप्राय उन सन्तोषी जीवों से भी है जो केवल भूत के गुण गा-गा कर भविष्य पर अपना अधिकार जताते हैं।

सामुदायिक योजनाओं और राष्ट्रीय विस्तार सेवाओं के अन्तर्गत चलाए गए जन-आन्दोलन में हमें ऐसे लोगों से सावधान रहना होगा जो कि प्राणहीन भूत के अवशेष मात्र हैं। हमें भुलभुलैयों और टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों से बचना है। हम जिस 'भविष्य' का आह्वान कर रहे हैं, वह जनता का होगा और जनता के लिए होगा।

—'कृषिपुत्र,

विकास का प्रतीक : सोनीपत

बो० जी० वर्गीज़

राज्यों के प्रधानों से लेकर प्रधान मंत्रियों और संसदीय तथा सांस्कृतिक प्रतिनिधि-मंडलों तक सभी विदेशी यात्रियों के लिए सोनीपत सामुदायिक योजना एक ऐसा झरोखा बन गई है जहाँ से वे समस्त भारत के दर्शन कर सकते हैं।

सोनीपत की यात्रा करना भी राजघाट की यात्रा की तरह अनिवार्य-सा बन गया है। यह उचित ही है क्योंकि इस योजना-क्षेत्र में गांधी जी की सर्वोदय की कल्पना को मूर्त रूप देने का प्रयास किया जा रहा है।

सोनीपत जानेवाला प्रत्येक यात्री वहाँ की प्रगति देख कर अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकता। अनेक एशियाई नेता जिज्ञासावश वहाँ गए और वहाँ रह कर उन्होंने बहुत कुछ देखा। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। सोनीपत एशिया और अफ्रीका को बहुत कुछ सिखा सकता है।

यहाँ आकर पंचवर्षीय योजना समझ में आती है; अच्छी फसलों, नलकूपों, सड़कों, पक्की गलियों, स्कूलों, चिकित्सालयों, खाद के गढ्ढों, सामुदायिक-केन्द्रों और अन्य बहुत-सी बातों के रूप में दिखाई देती है।

परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि जनता में जागृति की लहर दौड़ गई, अपनी दशा सुधारने का दृढ़ निश्चय जड़ पकड़ गया और इस बात का पक्का विश्वास हो गया कि सरकार कितनी भी दयालु क्यों न हो, उसकी सहायता की प्रतीक्षा किए बिना ही आपसी सहयोग और एक-दूसरे की सहायता करके बहुत कुछ किया जा सकता है।

रहने की दशा में सुधार के प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद हैं। बच्चों और प्रौढ़ों में साक्षरता बढ़ रही है और रोगों के कारण काल-कवलित होनेवाले मनुष्यों और पशुओं दोनों की ही संख्या घट रही है। आशा की सबसे बड़ी किरण लड़के-लड़कियों की स्वस्थ एवं चमकीली आँखों में दिखाई देती है जो स्कूल से लौटने पर अपने गाँव आनेवाले यात्रियों के आगे-पीछे घूमते दिखाई दे जाते हैं।

सोनीपत सामुदायिक योजना देश की अनेक योजनाओं में से एक है। अन्य स्थानों की तरह यहाँ भी काफी सफलता प्राप्त की जा चुकी है। परन्तु यह तो श्रीगणेश ही है। मुझे अनेक ग्रामीण भाई मिले जो घरेलू बगीचों, सीमेंट के मकानों, रेडियो और बिजली के इच्छुक थे। अब वहाँ 'समय' का एक नया अर्थ है। अब इसका अर्थ एक पीढ़ी न हो कर 'कल' रह गया है।

सामुदायिक योजना की सफलता दो बातों पर आधारित है। एक तो जागृत स्थानीय नेतृत्व आवश्यक है जो नवीन विचारों को आत्मसात करने और नया पग बढ़ाने में समर्थ हो। दूसरे योजना कर्मचारियों द्वारा पथ-प्रदर्शन, ऐसे व्यक्तियों द्वारा जो गाँववालों को जानते हों और उन्हीं में से हों, जो अपने हाथों से काम करने में न हिचकिचाएँ और अपने उदाहरण तथा मैत्रीपूर्ण दृष्टिकोण से गाँववालों का विश्वास प्राप्त कर सकें। दूसरी बात महत्वपूर्ण अवश्य है परन्तु अपने आप में पर्याप्त नहीं। यह तो प्राण फूँकने वाला मन्त्र है। परिवर्तन की इच्छा तो गाँववालों की ओर से प्रकट होनी चाहिए।

सोनीपत में दोनों तत्व ही कार्यरत हैं। योजना कार्य-पालक अधिकारी चौधरी रामगोपाल बहुत अच्छे व्यक्ति हैं। इससे पहले वह सहकारी समितियों के सहायक रजिस्ट्रार थे। वह प्रत्येक गाँव और उसकी समस्याओं को जानते हैं और प्रत्येक ग्रामवासी उन्हें जानता है। वह नेतृत्व का दम नहीं भरते, वह सहायता करते हैं। अपनी यात्रा में मैंने देखा कि एक गाँव को जानेवाली सड़क मानसून के उपरान्त मरम्मत की अपेक्षा रखती थी। चौधरी राम गोपाल ने इस ओर गाँव के सरपंच का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा—"अगले सप्ताह किसी शाम मैं इधर आऊँगा। रात में हम सिनेमा दिखाएँगे। अगली सुबह हम करीब ५०० आदमी इकट्ठे करके एक-दो घंटे में सड़क की मरम्मत कर डालेंगे।" सरपंच ने स्वीकृति में सिर हिला दिया।

यह सब सरलतम ढंग से हो गया। किसी तर्क-वितर्क या लम्बे वाद-विवाद की नौबत न आई। सड़क की मरम्मत ज़रूरी थी और सारा गाँव निजी अनुभव से जानता था कि इस सड़क ने उनके वैयक्तिक एवं सामूहिक जीवन में कितना परिवर्तन कर दिया है। मंडी को जानेवाली पक्की सड़क से संपर्क सरल बना दिया था। दूसरे गाँवों को निकट कर दिया था। सड़क को ठीक बनाए रखना तर्क का विषय नहीं रहा था। कार्य सम्पन्न किया जाना था और उसके लिए निःशुल्क श्रम स्वेच्छा से उपलब्ध हो जाता।

चौधरी रामगोपाल के अधीन उन्हीं की तरह उत्साही कर्मचारियों का एक दल है—नवयुवक ग्राम सेवक (ग्राम-स्तर कार्यकर्ता), एक कृषि निरीक्षक, समाज-शिक्षा संगठनकर्ता चौधरी दिलीप सिंह और एक महिला समाज-कल्याण संगठनकर्ता आदि।

सोनीपत योजना के २६५ गाँवों में ६० ग्राम सेवक हैं। जिन थोड़े से ग्राम सेवकों से मैं मिला, वे ग्राम-स्तर कार्यकर्ता बनने से पूर्व कृषि प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके थे। उनमें एक हरिजन भी था। सवर्ण हिन्दुओं के घरों में जाने और उन लोगों में कार्य करने में उसे कोई कठिनाई न होती थी। कुछ वर्ष पहले इन्हीं लोगों ने इस पर नाक-भौं चढ़ाई होती। उसने बताया कि उसका वेतन करीब ६० रुपए मासिक है। योजना-क्षेत्र में उसके परिवार के भरण-पोषण के लिए यह पर्याप्त न था। वह स्वयं एक गाँववासी के घर में रहता था। उसकी पत्नी एवं बच्चे ८० मील दूर उसके निजी गाँव में रहते थे। परिवार की आय बढ़ाने के लिए वहाँ उसकी पत्नी और बच्चे कुछ कमा सकते थे।

इन गाँवों ने भी कई प्रगतिशील नेताओं को जन्म दिया जो कि परिवर्तन के अग्रगामी नेता बन चुके हैं। कली राम बड़ खालसा गाँव का निवासी है। कली राम पहले सेना में था और चार वर्ष पूर्व ही गाँव लौटा था। इसके परिवार के पास २० बीघा उपजाऊ भूमि थी जो गाँव के आस-पास २० टुकड़ों में बँटी हुई थी। जब पंजाब चकबन्दी अधिनियम के अन्तर्गत चकबन्दी कार्य आरम्भ हुआ तो कली राम ने साहसपूर्वक अपने बीस टुकड़ों के बदले गाँव की सीमा पर एक टुकड़ा लेने का निर्णय किया। ग्रांड ट्रंक रोड के पार कली राम को ४२ बीघा रेतीली भूमि दे दी गई। यह दो वर्ष पूर्व की घटना है।

तब से अब तक कली राम भूमि का पुनरुद्धार करने, एक कुआँ खोदने और रहट चलाने, बैलों की एक जोड़ी खरीदने, खेत में एमोनियम सल्फेट और सुपरफास्फेट डालने पर ३,००० रुपए खर्च कर चुका है जिसमें से कुछ अंश उसने योजना ऋण के रूप में भी लिया है। ईख और मिर्चों के लिए उसके पास योजना-प्रदर्शन-प्लाट हैं। कली राम ने बड़े गर्व के साथ अपना फार्म दिखाया। ईख और मिर्च की बहुत अच्छी फसल तैयार हो रही है। उसके खातों से ज्ञात हुआ कि अगली फसल तक वह अपने सारे ऋण चुका देगा। आज कली राम की जो स्थिति है वह कठोर परिश्रम, महत्वाकांक्षा और आशावाद का ही फल है। गाँव से ज़रा हट कर उसका ईंटों का पक्का मकान है। आज उसके पड़ोसी उसके मकान, उसके रेडियो और तरकारी के बगीचे को ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं। उन्हें ज्ञात है कि वे स्वयं भी यह सब प्राप्त कर सकते हैं।

एक अन्य किसान भरत सिंह से भी मेरी भेंट हुई। उसके तथा उसके अन्य भाइयों के पास १४ एकड़ भूमि है जो ३ चकों में बँटी हुई है। गाँव के आपसी झगड़े के कारण चकबन्दी के दिनों में वह परिवार की समस्त भूमि

सोनीपत योजना क्षेत्र में एक स्कूल जिसे गाँववालों ने ऐच्छिक श्रम से बनाया

सोनीपत की वह सड़क जिसके लिए एक गाँववाले ने भूमि स्वेच्छा से प्रदान की

कीचकबन्दी न करा सके। नम्बरदार का विपक्षी दल उसके दल से अधिक शक्तिशाली था।

भरत सिंह ने कठोर परिश्रम करके काफी सफलता प्राप्त की है, परन्तु वह प्रसन्न नहीं है। उसके तथा भाइयों के २२ आश्रित हैं। एक भाई दिल्ली में सार्वजनिक निर्माण विभाग में १०० रुपए मासिक पर नौकर है। कृषि उत्पादनों के भाव गिरने से भरत सिंह की आर्थिक स्थिति पर दुष्प्रभाव पड़ा और उसने मुझे निस्संकोच बताया कि यदि उसे भी कोई रोजगार मिल जाए तो वह भी शहर चला जाएगा।

अनेक ग्रामीणों के ऐसे ही विचार हैं। यह उस समस्या का प्रतीक रूप है जिसे अभी हल करना है। उत्तम खेतों का अर्थ है उत्तम यंत्र, अधिक उपज और उत्तम जीवन। परन्तु इससे गाँवों में रोज़गार के अभाव की समस्या बिलकुल नहीं सुलझती। बीज बोने और फसल काटने के अतिरिक्त भरत सिंह अकेला ही बिना किसी सहायता के अपने फार्म का काम चला सकता है। परन्तु दूसरे तथा अन्य भाइयों के २२ आश्रित हैं। वर्ष भर कठोर परिश्रम के उपरान्त उसके भाग में बहुत थोड़ा ही आता है, विशेष कर जब कि अधिक उपज और बृहत-उत्पादन के कारण कृषि-उत्पादनों के मूल्य गिर गए हैं।

इसका उपचार सहायक उद्योगों के विकास द्वारा ही हो सकता है, जिनकी ओर योजना प्रशासन ने अब ध्यान देना आरम्भ किया है। कुछ केन्द्रों में स्त्री-पुरुषों को दस्तकारियों और गृहोद्योगों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पाञ्ची गाँव में बड़े सुन्दर कालीन बनाए जा रहे हैं। परन्तु प्रगति बहुत सीमित है और हाट व्यवस्था भी नहीं है। अगले वर्ष नंगल से बिजली उपलब्ध होने पर विकास के इस पहलू की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

एक दूसरी बड़ी समस्या बच्चों की है। प्रत्येक ग्रामीण को अनेक बच्चों को पालना पड़ता है और निश्चित रूप से वह इतने बच्चे नहीं चाहता। अनेक ग्रामीणों ने साफ़-साफ़ कहा कि वे अपने परिवार को नियन्त्रित करना चाहते हैं और उनकी स्त्रियाँ भी इस विषय में उनसे सहमत हैं। परन्तु परिवार नियन्त्रण के प्रचार की ओर अभी तक कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया है। एक गाँव में मुझे बताया गया कि 'रिदमिक' पद्धति अनुपयोगी सिद्ध हुई है।

यह कहना बिलकुल मिथ्या होगा कि ग्रामीणों ने योजना से लाभ नहीं उठाया है अथवा उनमें और अधिक प्रयत्न करने की कोई इच्छा नहीं है। इसके विपरीत गत ३० महीनों में सड़कों, स्कूलों, सामुदायिक केन्द्रों के निर्माण तथा अन्य योजनाओं के लिए ग्रामीणों द्वारा २६ लाख रुपए का ऐच्छिक योगदान उनके उत्साह का पर्याप्त प्रमाण है। इस राशि में से करीब ७ लाख रुपया नक़द था और शेष निःशुल्क श्रम और भूदान के रूप में प्राप्त हुआ था।

योजना अधिकारियों का अनुमान है कि गत २ वर्षों में खेती के सुधरे हुए तरीकों के अपनाने से क्षेत्र के कुल

[शेष पृष्ठ १४ पर]

सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय विस्तार सेवा

वी० टी० कृष्णमाचारी

पंचवर्षीय योजनाओं में राष्ट्रीय विस्तार आन्दोलन का स्थान बहुत ऊँचा है। इस आन्दोलन के दो क्रम हैं — सामान्य विकास और विशेष विकास। पहले क्रम में राष्ट्रीय विस्तार सेवा के अन्तर्गत विकास खंडों का सामान्य विकास किया जाता है, दूसरे क्रम में इन विकसित खण्डों को विशेष विकास के लिए सामुदायिक खण्डों में परिवर्तित कर दिया जाता है। जब इन खण्डों का पूर्ण विकास हो जाता है तो वे फिर राष्ट्रीय विस्तार सेवा के अन्तर्गत ले लिए जाते हैं। यह सेवा स्थायी सेवा है और इसे केन्द्रीय सरकार से सहायता मिलती है।

ये दोनों क्रम एक दूसरे से मिले हुए हैं, और एक ही आन्दोलन के हिस्से हैं। हाल ही में यह निर्णय किया गया है कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना की अवधि में राष्ट्रीय विस्तार सेवा समस्त देश में फैल जानी चाहिए और कम से कम ४० प्रतिशत खण्ड विशेष विकास के लिए सामुदायिक विकास खण्डों में परिवर्तित हो जाने चाहिएँ।

इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य भारत के गाँवों की दशा सुधारना और नई समाज-व्यवस्था को जन्म देना है। राष्ट्रीय विस्तार सेवा और सामुदायिक योजनाएँ गाँव वालों के विचारों को बदलने में सहायता देती हैं और अच्छा जीवन बसर करने की इच्छा पैदा करती हैं। यही नहीं, उनमें मिलकर काम करने की भावना भी पैदा होती है।

इस बात को भली भाँति जान लेना चाहिए कि यह आन्दोलन सरकारी नहीं, जनता का है। यह स्वावलम्बन पर आधारित है। सरकार तो केवल सलाह और वित्त आदि की सहायता देती है।

सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए हमें निम्न उपायों को काम में लाना होगा—

(१) रोज़गार और उत्पादन में वृद्धि करना। इसके लिए हमें वैज्ञानिक ढंग से खेती करनी होगी और घरेलू तथा छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन देना होगा।

(२) सामुदायिक प्रयत्न और सहयोग की भावना पैदा करना। लोगों को यह भली भाँति जान लेना चाहिए कि स्वावलम्बन के बिना उन्नति नहीं हो सकती और देश की समस्याओं का हल सहयोग से ही हो सकता है।

(३) समस्त गाँव के लाभ के काम को मिलकर करना। हर परिवार को समस्त गाँव के लाभ के काम करने में अपना थोड़ा-बहुत समय अवश्य लगाना चाहिए।

(४) गाँव में महिला और युवक आन्दोलन चलाना। यह बहुत आवश्यक है कि गाँव के युवक और महिलाएँ भी इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लें।

यह आन्दोलन तभी सफल समझा जाएगा जब इससे गाँव के प्रत्येक परिवार को लाभ पहुँचने लगेगा। यदि इससे केवल बड़े-बड़े किसानों को ही लाभ पहुँचा तो यह निष्फल हो जाएगा। इसका मुख्य उद्देश्य तो असमानता को हटाना और रहन-सहन के स्तर को ऊँचा करना है।

खेती में सफलता प्राप्त करने के लिए खेतों की चकबन्दी आवश्यक है। चकबन्दी के बिना उपर्युक्त कार्यक्रम भी पूरे नहीं किए जा सकते। इसलिए राष्ट्रीय विस्तार सेवा के सभी खण्डों में चकबन्दी नियमित रूप से आरम्भ हो जानी चाहिए।

उसके अलावा, भूमि सुधार के उपाय और वैज्ञानिक ढंग से खेती की व्यवस्था भी आवश्यक है।

आन्दोलन गतिशील होना चाहिए और समाज व्यवस्था का सुधार इसका उद्देश्य होना चाहिए। गाँव के सब लोगों को यह समझना चाहिए कि उनके हित परस्पर सम्बद्ध हैं और सबकी उन्नति में ही उनकी उन्नति है।

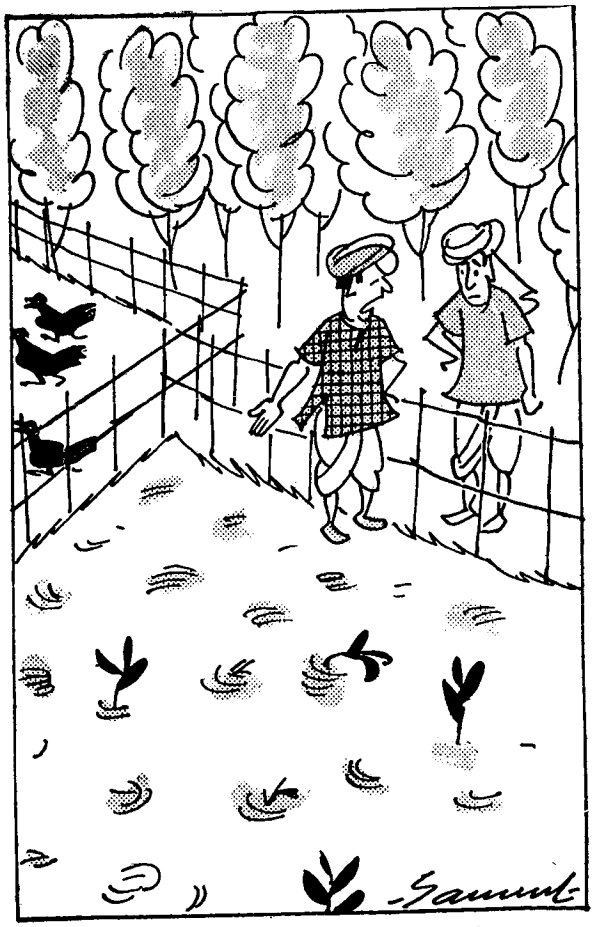

"यदि मैं बढ़िया बीजों पर और मेरा पड़ौसी बढ़िया नसल के चूज़ों पर परीक्षण करते रहे तो बस हो चुका!"

भाग्य जागे !

उमाशंकर श्रीवास्तव

शाम का समय हो चला था। हरखू अपनी भैंस दुहकर दालान में बैठा चिलम के मज़े ले रहा था। सुखिया चौके में भोजन का प्रबन्ध कर रही थी। कुछ-कुछ अँधेरा हो चला था। तभी किसी ने पुकारा—"भाई हरखू। घर में हो।" हरखू ने चिलम एक तरफ रखी, खड़ा होगया और पूछा—"कौन है ?"

"मैं हूँ पिपरिया दुलई का जगेसर।"

हरखू एकदम घर से बाहर आ गया और बोला—"बहुत दिनों बाद दर्शन दिए। कहो कैसे रहे ? घर का कुछ हाल-चाल बताओ। मैं ज़रा बैठने को मचिया ले आऊँ।" इतना कहकर हरखू अन्दर चला गया।

मालकिन ने पूछा—"कौन आया है ?"

हरखू ने कहा—"बहनोई आए हैं। ज़रा शर्बत-पानी तो तैयार करो, मैं तब तक हुक्का ताज़ा करे लेता हूँ।"

हरखू ने मचिया डाल दी और खुद हुक्का ताज़ा करने लगा। इधर मालकिन ने चटपट मैली धोती बदल डाली और रंगी धोती पहन कर एक कटोरी में बताशे और एक लोटा पानी लेकर आ गई और बोली—"लाला अच्छे तो हो, बहुत दिनों बाद सुध ली।"

जगेसर ने कहा—"भाभी ! इधर घर की झंझटों से फ़ुरसत ही नहीं मिल पाई, आता कैसे। एक बैल था वह माता की बीमारी में चल बसा। खेती-बाड़ी भी अच्छी नहीं हो पाई। लड़का इतना बड़ा हो गया कुछ करता ही नहीं। तुम्हारी ननद तो हमेशा बीमार ही रहा करती है। पता नहीं भगवान मुझे क्यों दुख दे रहे हैं।"

इस बीच हरखू ने हुक्का भरकर बहनोई के हाथ में दिया। बात-चीत करते-करते हरखू ने कहा—"हमारी अब की धान की फ़सल बड़ी अच्छी रही। एक एकड़ में पक्के चालीस मन धान हुआ।"

जगेसर ने सुना तो आँखें फाड़कर हरखू का मुँह देखने लगा। बोला—"हमने अपनी उमर में ऐसा नहीं सुना। यह सब कैसे आपने कर लिया ?"

हरखू ने कहा—"भैया पारसाल से यहाँ ब्लाक जो खुल गया है उसमें सरकार ने कई अहलकार नौकर रखे हैं जो नित हमें नई-नई बातें बताते रहते हैं। धान भी मैंने सुधरे तरीके से बोया था, तभी इतनी पैदावार हुई।"

"यह ब्लाक क्या चीज़ है? तनिक हमें भी तो बताओ।"

"हमारी सरकार ने किसानों के हर तरह के विकास के लिए एक नया महकमा क़ायम किया है जिसमें खेती-बाड़ी के लिए उम्दा बीज, खाद और हल दिए जाते हैं। जो किसान नक़द दाम पर नहीं ले सकता सरकार उसे तकावी के रूप में पैसा दे देती है और मज़ा यह कि सूद नाम मात्र को लेती है श्रमदान करके हम लोगों ने नई-नई नहरें बना ली हैं। जहाँ नहर नहीं जा सकती वहाँ लोगों ने पक्के कुएँ बनाकर रहट लगा लिए हैं और उससे सींच कर फ़सल पैदा कर लेते हैं।"

"बस रुपया ही देते हैं ?"

"नहीं, नहीं, वह लोग करीब-करीब रोज़ ही आया करते हैं। हमारे खेतों में नए-नए तजुर्बे करके बतलाते हैं कि किस तरह खाद डालने से पैदावार बढ़ाई जा सकती है, कैसे कम दाम पर निकाई-गुड़ाई के औज़ारों से मज़दूरी की बचत की जा सकती है।"

"अगर किसी के पास बैल न हों तो ?"

"तो बैल खरीदने के लिए सरकार से हैसियत के मुताबिक रुपया मिल सकता है। इसके अलावा ग्राम सेवकों ने देशी बछड़ों को बधिया कर दिया है और हमारी ग्राम सभा ने एक बढ़िया मुर्रा भैंसा और एक हिसारी साँड केवल पचास-पचास रुपए में खरीदे हैं जिससे हमारे जानवरों की नसल में सुधार हो रहा है।"

"क्या हमारे देशी साँड खराब थे ?"

"हाँ, देशी साँड ज़रूर खराब थे। उनसे जो बच्चे होते थे वे बड़े कमज़ोर होते थे। गाय भैंस दूध भी कम देती थीं।"

"क्या बढ़िया साँड ही से दूध ज्यादा होने लगता है ?"

"नहीं बढ़िया साँड ही से नहीं बल्कि जानवरों के लिए हरा चारा भी देना बहुत ज़रूरी है।"

"हरा चारा तो केवल वर्षा में ही मिल सकता है, और वह भी चरी बोने से·····"

"नहीं भइया जाड़े में 'खरसीम' जो एक प्रकार की घास ही है, बोने से हमें हरा चारा मिलता है और नैपियर घास बोने से सदा ही हरा चारा घर में मौजूद रहता है।"

"और अगर जानवर बीमार पड़ जावें तो ?"

"एक तो हमारे जानवर अब बीमार ही कम पड़ते हैं दूसरे यहाँ पर ग्राम सेवक के पास हमें हर समय दवा मिल जाती है। इसके अलावा जानवरों के अस्पताल के डाक्टर साहब भी आने लगे हैं। बीमार होने के पहले ही हम लोगों के जानवरों के टीका लगा दिया जाता है।"

"मगर तब भी खुरपका तो ज़रूर ही हो जाता होगा क्योंकि जानवरों के नीचे तो सदा गन्दगी ही रहती है।"

"हमारे गाँव में अब ऐसी बात नहीं। हम लोग रोज़ ही बैलों के नीचे कुछ न कुछ कूड़ा करकट डाल देते हैं। इससे हमारे दरवाज़े की सफाई भी हो जाती है और बैलों के नीचे सूखा भी रहता है। दूसरे दिन उसे उठाकर खाद के गढ़े में डाल देते हैं जिससे हमें अच्छी खाद मुफ्त में मिल जाती है।"

"तभी तो मैं भी देख रहा हूँ तुम्हारे घर का नक्शा ही बदल गया है।"

"हाँ, हमारे कुओं में हमेशा लाल दवा पड़ा करती है। कुएँ की जगत भी पक्की हो गई है और चरखियाँ लग गई हैं। नहाने के लिए अलग चबूतरा बना है। चेचक और हैजे के टीके हम लोग बराबर लगवा लेते हैं। कोई बीमारी नहीं फैलती।"

"भाई तब तो बड़ा इन्तज़ाम हो गया है।"

"इसके अलावा हमारे गाँव में रात का एक स्कूल भी खुल गया है जिसमें केवल प्रौढ़ों को शिक्षा दी जाती है। हम सब गाँव वालों ने मिलकर कसम खाई है कि कोई भी अनपढ़ न रहेगा और अंगूठा लगाने के बजाय सदा दस्तखत करेंगे। हमारे बच्चों के लिए भी स्कूल खुल गया है। हम लोगों ने श्रमदान करके एक स्कूल की इमारत केवल पन्द्रह दिन में ही बना डाली है।"

"मगर यह तो बताओ कि तुमने अपना काया पलट केवल सालभर में कैसे कर लिया। भैंस भी खरीद ली, एक जोड़ी बैल भी बँधे हैं, घर का दरवाज़ा भी पक्का दिखाई देता है।"

"हम तो यही कहेंगे कि जब से यहाँ ब्लाक खुला है हमारे भाग्य जाग गए हैं। पारसाल मेरे दो बीघा खेत में ग्राम सेवक ने एक नए तरीके से गेहूँ बुवाया था। शुरू में तो मैंने समझा कि इसमें क्या होगा जब कि बीज ही केवल साढ़े तीन सेर पड़ा है। जब खेत बढ़ने लगा तो भरा-भरा दिखाई देने लगा। मैंने एक दफ़ा उसकी निकाई कर दी थी और तीन सिंचाई कीं। परन्तु फ़सल का क्या कहना। एक-एक में पचास-पचास कल्ले निकले। ग्राम सेवक ने मुझ से प्रतियोगिता का एक फारम भरवाया और मेरे खेत की कटाई बड़े-बड़े अफ़सरों ने कराई। उसमें पचास मन फी एकड़ के हिसाब से पैदावार निकली। मुझे ज़िले में १,००० रुपए का प्रथम इनाम मिला जिससे मैंने यह भैंस और दोनों बैल खरीद लिए।"

इतने में सुखिया ने पुकारा—"खाना तैयार है, हाथ-मुँह धो लो।"

दोनों ने हाथ-मुँह धोए और खाने बैठ गए। उसके बाद एक-एक कटोरा मलाईदार दूध सुखिया ने लाकर आगे धर दिया। जगेसर ने कहा—"हरन्नू! यहाँ ब्लाक खुलने से तुम्हारे तो भाग्य जाग गए। देखो हमारे गाँव के कब भाग्य खुलते हैं।"

★ ★ ★

विकास का प्रतीक : सोनीपत

—[पृष्ठ ११ का शेषांश]

उत्पादन में करीब ५० लाख रुपए की वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त आय के अधिकांश भाग का उपयोग फार्मों, अच्छे घरों के निर्माण और बच्चों के स्कूलों के लिए किया गया है। प्रचार के परिणामस्वरूप विवाह पर औसत व्यय ५,००० से घट कर ३,००० रुपए रह गया है और दहेज़ जो पहले ५०० से लेकर १,००० तक था अब घट कर ५१ से लेकर १०० तक रह गया है। गत वर्ष गाँवों के एक समूह में अधिकतम दहेज़ १२५ रुपया था। चकबन्दी के कारण मुकदमेबाज़ी में भी कमी हो गई है।

सामाजिक जागृति स्त्रियों में अपेक्षाकृत कम है, क्योंकि योजना का प्रत्यक्ष प्रभाव पुरुषों पर अधिक पड़ा है। महिला स्वास्थ्य-निरीक्षकों और दाइयों की बहुत कमी है और इस कमी को दूर करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। १७७ गाँवों में एक-एक प्रशिक्षित दाई है। शेष गाँवों में भी शीघ्र ही ऐसी व्यवस्था हो जाएगी। अगली पीढ़ी की अधिकांश माताएँ शिक्षित होंगी।

योजना प्रशासन की सबसे बड़ी कमज़ोरी वित्तीय स्वीकृति के पेचीदा नियमों की है। इन नियमों के कारण प्रायः देरी होती है और इस बीच में स्थानीय उत्साह और उमंग ठंडे पड़ जाते हैं।

कभी-कभी सार्वजनिक निर्माण विभाग ने भी उन कच्ची सड़कों को पक्का बनाने में काफी सुस्ती दिखाई है जिन्हें ग्रामीणों ने ऐच्छिक श्रम से बनाया था। इस दोष को भी दूर किया जाना चाहिए।

सोनीपत सामुदायिक योजना की मेरी यात्रा का अन्त जहाँकोली ग्राम में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम से हुआ जिसका संयोजन युवक क्लब ने किया था।

['टाइम्स आफ़ इण्डिया' के सौजन्य से]

भोपाल सामुदायिक योजना-क्षेत्र की एक प्रदर्शन-गा

सामुदायिक योजनाओं की प्रगति

रतनपुरा (बलिया) गाँव के इस युवक

भोपाल राज्य में युवक क्लब द्वारा उगाई गई एक फ़सल

बिहार में सामुदायिक योजना के अन्तर्गत कढ़ाई की एक कक्षा

राजस्थान के साईंपुरा गाँव में श्रमदान द्वारा एक तालाब की खुदाई

ऊपर : त्रिपुरा में एक प्रौढ़-शिक्षा कक्षा। **नी**
क़बाइलियों द्वारा बनाई गई

मध्यभारत के एक ग्राम-प्रशिक्षण शिविर की झाँकी

राँची के सामुदायिक योजना खण्ड में सिलाई की एक कक्षा

पेप्सू में युवकों द्वारा श्रमदान

उड़ीसा के सुन्दरगढ़ विकास खण्ड में जनता द्वारा मुख्य सड़क से गाँव को मिलानेवाली सड़क का निर्माण

ग विकास खण्ड में
याँ

पाँवता प्राशिक्षण केन्द्र में सिलाई की कक्षा

अजमेर राज्य के

फतेहपुर बेरी में महिला शिविर

सावित्रीदेवी वर्मा

इस साल ता० २८ मई से १७ जून तक भारत सेवक समाज, दिल्ली की ओर से फतहपुर बेरी (थाना महरौली) में महिला शिविर लगा। ग्राम-जीवन में एक चहल-पहल पैदा करना, ग्रामीण बहनों के पारिवारिक जीवन को आनन्दमय बनाने की प्रेरणा देना तथा प्राप्त सुविधाओं का सही उपयोग करके अपने जीवन-स्तर को ऊपर उठाने की जानकारी देना, इस शिविर का उद्देश्य था। यह तभी सम्भव हो सकता था जब कि शहरी बहनें अपनी ग्रामीण बहनों के साथ हिल-मिल कर, उनका विश्वास प्राप्त करतीं, एक घरेलू वातावरण में उनका दुख-सुख सुनती, समझतीं तथा अपने सहयोग द्वारा उनकी तकलीफों को दूर करतीं।

उपरोक्त सभी बातों का ध्यान रख कर इस शिविर का आयोजन किया गया। भिन्न-भिन्न स्कूलों से छात्राएँ सेवा भावना से प्रेरित होकर आश्रम जीवन बिताने तथा अपनी सेवाओं द्वारा भारत सेवक समाज के ध्येय को सफल बनाने के लिए वहाँ आईं। शिविर की माताजी श्रीमती प्रियंवदा देवी तथा महिला-मंत्रीमंडल की अन्य सदस्याओं के अनुशासन में शिविर का कार्यक्रम बहुत सफल रहा। कन्याओं ने बड़े उत्साह और प्रेम के साथ दैनिक कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। इतनी तपती दोपहरी में उनका लगन के साथ काम में जुटे रहना वास्तव में प्रशंसनीय था।

श्रीमती सावित्री निगम तथा सुश्री चन्द्रा, जिनके अथक परिश्रम और सहयोग से यह शिविर सफल हुआ सचमुच में बधाई की पात्र हैं। ये बहनें दोपहर में जीप में बैठकर सप्ताह में तीन-चार दिन प्रायः शिविर का निरीक्षण करने तथा शिवरार्थियों को प्रोत्साहन देने जाया करती थीं। इस शिविर में ३-४ दिन जाने का मुझे भी सुअवसर प्राप्त हुआ। वहाँ का आँखों देखा वर्णन में आप को बताती हूँ।

जून की तपती दोपहरी में हमारी जीप, जिसमें आठ व्यक्ति ठुस कर समाये हुए थे, फतहपुर बेरी गाँव की ओर भागी जा रही थी। ड्राइवर काफी होशियार था, नहीं तो ऊँचे-नीचे रास्ते में हिचकोले खाती जीप को सँभालना सरल नहीं था। धरती बजरीली थी। इधर-उधर दूर तक कोई छायादार पेड़ नज़र नहीं आ रहा था। केवल कुछ झाड़ियाँ थी, जिन्हें ग्वालों के छोरे-छोरियां अपने ढोरों को खिलाने के लिए काट रहे थे। इस ओर अधिकांश गाँवों में ग्वाले ही रहते हैं जो कि घास के अभाव में इन्हीं झाड़ियों की कुट्टी करके अपने ढोरों को पालते हैं।

आठ मील का ऊबड़-खाबड़ रास्ता पार करने के बाद गाँव के बेसिक-स्कूल में जहाँ भारत सेवक समाज का महिला शिविर लगा था, हम लोग पहुँचे। हमारे साथ में माता जी (श्रीमती बजाज) भी थीं। शिविर की माँ जी श्रीमती प्रियंवदा देवी तथा लड़कियों ने हमारी जीप घेर ली। जल्दी-जल्दी सामान उतारा। कमरे में गाँव के पंच लोग पहले से ही बैठे हुए थे। वहाँ पहुँचने पर मालूम हुआ कि माता जी के हाथ से आज शिविर के कम्पाउंड में ही एक नया कुआँ खुदवाने का श्रीगणेश किया जाएगा। श्रीमती बजाज ने कुआँ-दान का व्रत लिया हुआ है। उनके श्री कमलों से यह पुण्य कार्य भी हो जाए यही गाँव वालों की इच्छा थी। गाँव के लोगों ने अपने गाँव में जल कष्ट की बात बताई। रतिलाल नामक एक तेजस्वी युवक बोला– "माता जी हम दान नहीं माँगते हैं। हम तो उन वीरों की सन्तान हैं जो कि सन् ५७ के गदर में अपने यहाँ के १४ वर्ष से ऊपर के सब पुरुषों को स्वाधीनता के यज्ञ में बलिदान कर चुके हैं। बरसात में ऊपर पहाड़ी से तीन नाले आकर इस गाँव के पास पहाड़ी के नज़दीक इकट्ठे हो जाते हैं और यहाँ की सारी ऊसर मिट्टी बहाकर ले जाते हैं। गर्मियों में पानी की यहाँ बड़ी कमी रहती है। सिंचाई के अभाव में कोई अच्छी फसल पैदा नहीं हो पाती। यदि बाँध बना कर इन नालों का पानी रोक लिया जाए तो आस-पास के सभी गाँवों को पानी और सिंचाई का सुख हो जाए।"

माता जी ने समझाते हुए कहा– "भाई, जो तुम कहते हो सब सच है, पर सरकार के पास अभी इतना रुपया नहीं है। अभी तो तुम लोग खुद अपने परिश्रम से गहरे कुँए खोदो। हो सकता है कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना में तुम्हारे गाँव में बाँध बनाने की योजना पर सरकार विचार करे। भारत सेवक समाज तो थोड़ा सहयोग और प्रेरणा दे सकता है पर प्रगति का मार्ग तो गाँव वालों को खुद ही तय करना होगा। स्वावलम्ब के बिना काम नहीं चलेगा।"

मैंने कहा—"माता जी ठीक कहती हैं। अब तुम देख ही रहे हो कि भारत सेवक समाज तुम्हारे लिए कितना कुछ

कर रहा है। ग्राम-कार्यकर्ताओं को सहयोग दिया जाएगा। तुम कार्यकर्ता तैयार करो। गाँवों की ओर सरकार तथा शहरी जनता का ध्यान गया है। जब गाँव उठेंगे तभी देश उठेगा। तुम लोगों के प्रति शहर के लोगों की कितनी सहानुभूति है, इसका प्रमाण है यह शिविर। स्कूलों से, घरों से कितनी बहनें सेवाभाव से प्रेरित होकर यहाँ आई हैं। आप लोगों को जो वह इस समय बताएं, सिखाएं उसे समझो, सीखो। यह बहनें तो कुछ दिन यहाँ रह कर चली जाएँगी, बाद को इनके बताए कामों को चालू रखना तुम लोगों का काम है। काम शुरू करना तो कठिन नहीं है, परन्तु उसे आगे बढ़ाते रहना ही कठिन है।"

गाँव वालों ने फिर अपनी अन्य तकलीफें भी बताईं कि गाँव में कोई अख़बार नहीं आता, इसलिए उन्हें बाहरी दुनिया की कोई खबर ही नहीं मिल पाती। मैंने उन्हें 'हिन्दुस्तान' (दैनिक) भेजने का आश्वासन दिया। इससे उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। आश्रम की माँजी ने बताया कि गाँव की बहनों को सिलाई-बुनाई सिखाने के लिए शिविर में कपड़े, रंगदार डोरे और ऊन की भी बहुत कमी है। श्रीमती निगम ने इस माँग को शीघ्र ही पूरा करने का वचन दिया।

गाँव के दो-तीन मैट्रिक पास लड़कों ने यह इच्छा प्रगट की कि उन्हें शहर में नौकरी दिलवा दी जाए। माता जी (श्रीमती बजाज) ने उनकी बात सुन कर समझाते हुए कहा—"पढ़-लिख कर गाँव छोड़-कर शहर में बसने का आप लोगों का इरादा ठीक नहीं है। तब तो गाँव में केवल अनपढ़ों का ही वास रहेगा। आप लोगों की बेरोज़गारी की समस्या गाँव में ही हल हो सकती है। जैसा कि पंचों ने बताया कि गाँव में न तो कोई बढ़ई है न लुहार, न कोई दर्जी है न तेली। ऐसी सूरत में आप लोग पढ़-लिख कर यदि इन धंधों को अपना लें तो गाँव की ज़रूरतें भी पूरी हो जाएँ और आप लोग इन कार्यों में आत्मनिर्भर भी हो जाएँ। खेती-बाड़ी के नए तरीकों को अपनाएँ, ढोरों की नसल सुधारें, दूध-घी का व्यवसाय करें। इससे आप लोगों की जीविका का प्रश्न हल हो जाएगा। पर बाबू-गीरी करने के लिए शहर जाने का इरादा छोड़ दें।"

एक बात गाँव में और शोचनीय है। छोटी आयु में लड़के-लड़कियों का विवाह कर दिया जाता है और किशोर आयु में ही वे एक-दो बच्चों के माँ-बाप बन जाते हैं। इससे छोटी उमर में ही उन पर बड़े परिवार का भार आ पड़ता है। कुछ अन्य सामाजिक कुरीतियाँ भी प्रचलित हैं जिन पर दिखावे के लिए कर्ज़ लेकर पैसा खर्चा जाता है। मुकद्दमेबाज़ी का शौक आदि बुराइयों को रोकने की बात पंचों ने स्वीकार की। नशा, जुआ, आदि दुर्व्यसनों को छोड़ने के लिए भी समझाया गया। ग्रामीण संस्कृति को विकसित करने, लोक-गीत, लोक-नृत्य, त्योहार उत्सव आदि को मनाने का प्रोत्साहन भी दिया गया। सामूहिक रूप से गाँव की सफाई में सहयोग देने का सब ने वचन दिया।

अन्त में माता जी ने कन्याओं द्वारा किए गए कामों का निरीक्षण किया। कन्याओं द्वारा बनाए गए चार्ट, चित्रकारी, सिलाई, कताई, बुनाई आदि प्रशंसनीय थीं। उनकी दिनचर्या भी बहुत सुन्दर थी। दोपहर के समय गाँव की बहनों को सिलाई-कटाई, अक्षर ज्ञान, बच्चों का पालन-पोषण आदि सिखाया जाता था। उसके बाद गीत भजन द्वारा उनमें अच्छे संस्कार पैदा किये जाते थे। कन्याएँ प्रातःकाल प्रभातफेरी के लिए जाती थीं। सुबह एक घंटा सामने के मैदान में खुदाई करके अपने श्रमदान से कन्याओं ने, बच्चों के खेलने के लिए एक अच्छा-खासा चौगान तैयार कर दिया था। ६ बजे से ११ बजे तक गाँव की सफाई का काम शुरू होता था। इन बीस दिनों में उन्होंने जो काम किया वह सराहनीय था। शिविर में कन्याओं ने आश्रम जीवन के अनुसार हेल-मेल और अनुशासन में रह कर कार्य किया। इस प्रकार के शिविर कार्य से जहाँ एक ओर गाँव वालों को लाभ हुआ दूसरी ओर देश की सेविकाओं को भी अच्छी खासी ट्रेनिंग तथा प्रोत्साहन मिला।

शाम होने को आई थी। प्रार्थना का समय हो चला था। अतएव कन्याओं के साथ हम सब भी गाँव की ओर चल दिए। गाँव के बीच में से गीत गाती हुई हमारी टोली चौक की ओर चल दी।

गोधूलि का समय था। गाय-भैंस घंटी बजाती, रंभाती, धूल उड़ाती चरागाहों से लौट रही थीं। जब प्रार्थना समाप्त हो गई तब माता जी, श्रीमती पुरी तथा मैंने भी गाँव वालों को भारत सेवक समाज का ध्येय, गाँव वालों के सहयोग का महत्त्व तथा गाँव की उन्नति किस प्रकार हो सकती है आदि बातों पर कुछ सुझाव दिये। कार्यक्रम समाप्त होने पर माता जी (श्रीमती बजाज) और श्रीमती पुरी पीछे गाँव वालों से बातें करने के लिए रुक गईं। मैं लड़कियों के साथ आप-शप करती हुई आगे निकल आई। आगे की

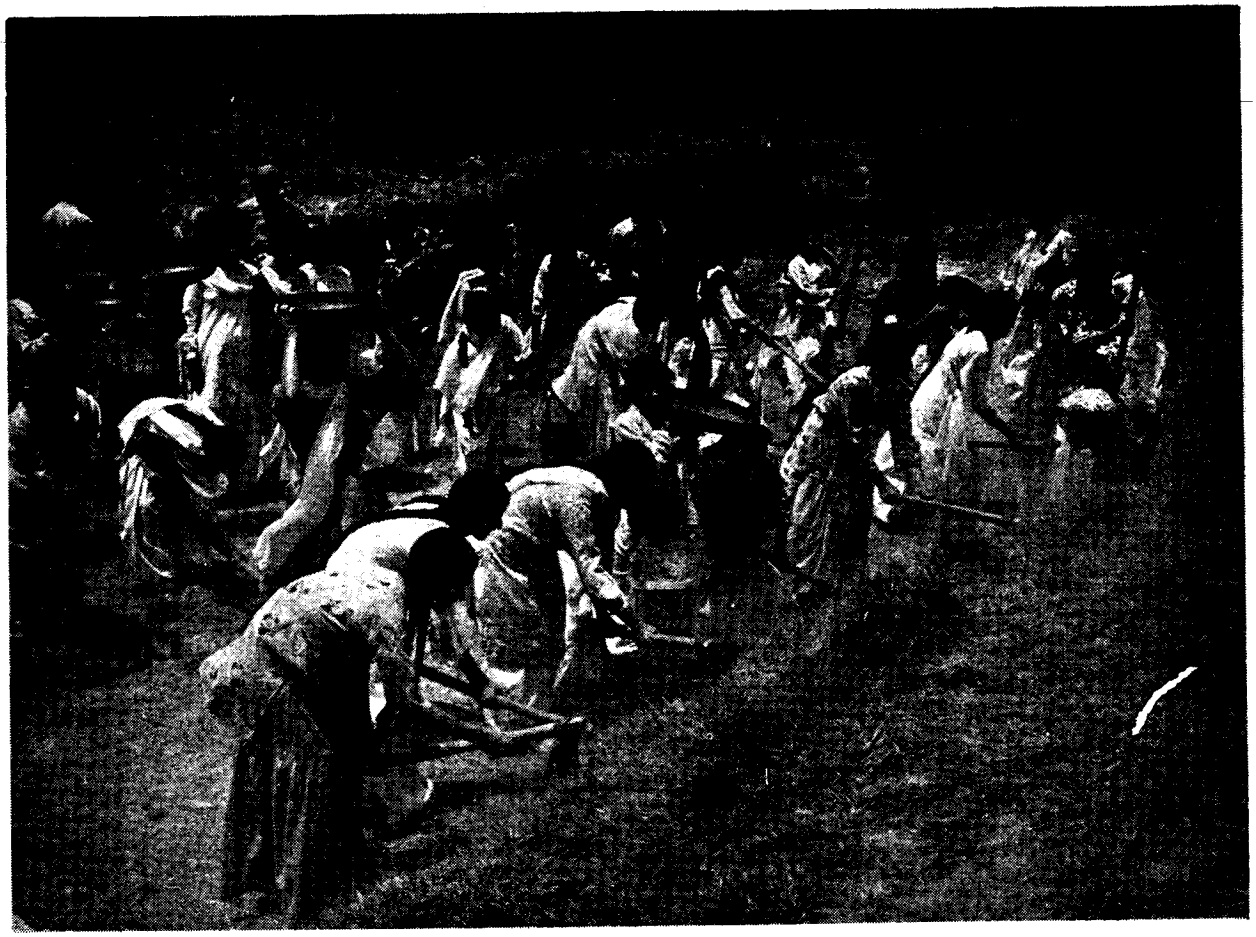

दिल्ली के लेडी इरविन स्कूल की छात्राओं द्वारा श्रमदान

लड़कियाँ दो-दो की लाइन में गीत गाती हुई बेसिक स्कूल की ओर जहाँ महिला शिविर का पड़ाव था जा रही थीं। गाँव की सीमा के बाहर निकल कर साफ हवा में गहरी साँस लेकर मेरी जान में जान आई। चारों ओर इतनी फैली हुई जगह है; पर राम जाने गाँव वाले मकान बनाते समय इतनी सकरी गलियाँ क्यों बनाते हैं! जहाँ आज प्रार्थना हुई कहने को तो वह चौक है पर शाम के समय यदि लोग वहाँ बैठे रहें तो ढोर उन्हें रौंद कर निकल जायें।

श्यामा बोली—"बहन जी आज देखा नहीं था जब प्रार्थना हो रही थी और पिछवाड़े की तंग गली से बैलगाड़ी वाला गाड़ी हाँकता ही चला आया और बैल तो फिर बैल ही ठहरे, भूखे प्यासे घर के समीप आकर सानी खाने के लिए उतावले, रोके नहीं रुकते थे।"

मैंने कहा—"गाँव के लोग हैं तो बड़े भावुक। इनमें आस्था भी बहुत है पर आपस में मेल-मिलाप की कमी है। जब श्रीमती पुरी ने मुझे सफाई और स्वास्थ्य पर बोलने के लिए कहा था, कुछ औरतें पास में बैठी खूब घुसर-पुसर कर रही थीं। एक तो बोली, सफाई-सफाई की दुहाई मचा रखी है, काहे से सफाई करें? इनके मुंडे से। साबुन पानी के बिना क्या सफाई हो सके है? एक हद तक उनकी बात है भी ठीक। जीविकोपार्जन करने का सवाल उनके आगे पहले है। गाँव में पानी की भी बहुत किल्लत है। तो भी इतना तो स्त्रियाँ कर सकती हैं कि घरों को साफ रखें, कुंए पर जाकर कपड़े धो लें और रोज नहाएं, नालियों में कूड़ा न फेंके।"

शान्ति ताली बजा कर एक दम से मेरी ओर घूम पड़ी, मानों कोई दिल-चस्प घटना उसे याद आ गई हो और बोली—"इन गाँव की स्त्रियों की तो गन्दा रहने की आदत-सी पड़

[शेष पृष्ठ ३२ पर]

धरती की पुकार

सोना, चाँदी, लाल, जवाहर घर-घर में मैं भर दूँगी,
चन्दन, अक्षत, धूप, फूल, फल खुद न्योछावर कर दूँगी।

मैं मिट्टी, बेमोल बिकी हूँ हाथ तुम्हारे, ओ मानव !
जहाँ रहोगे वहीं रहूँगी साथ तुम्हारे, ओ मानव !

मेरा जो कुछ भी अपना है, मुझ को जो कुछ पाना है,
उसे सहस्र-सहस्र गुना कर तुमको ही लौटाना है।

ये वन-पर्वत, ये नद-नदियाँ, ये सर-सागर लहराते,
ओ मेरे मानव ! तव सेवा को ही क्षण-क्षण अकुलाते।

पर्वत तोड़ो : मार्ग बनाओ : वन उपजाओ या काटो ;
नद-नदियों की राह बदल दो; सिन्धु मथो; पोखर पाटो ;

हल-बक्खर ले लो, मेरा हिय चीरो, मैं सब सह लूँगी,
सहकर तुम्हें सदा ही शस्य-श्यामला मुस्कानें दूँगी।

पर ओ मुझ धरती के राजा ! ओ मेरे प्रिय ! ओ भगवान् !
मात्र एक ही दान माँगती हूँ मैं बदले में : श्रमदान।

—प्रयागनारायण त्रिपाठी

भारत में सामुदायिक विकास कार्यक्रम

भारत में सामुदायिक विकास कार्यक्रम जनता का एक ऐसा आन्दोलन है, जिसे सरकार का सहयोग प्राप्त है और जिसका उद्देश्य जनसाधारण के जीवन को सर्वांगपूर्ण बनाना है। जब हमें स्वाधीनता प्राप्त हुई तो हमारी स्थिति बहुत ही चिन्ताजनक थी। देश में दरिद्रता, अज्ञान और रोगों का बोलबाला था और लोगों का जीवन स्तर बहुत ही गिरा हुआ था। विभाजन के कारण उत्पन्न होनेवाली समस्याओं ने स्थिति को और भी गम्भीर बना दिया। देश के सामने समस्याएँ तो अनेक थीं, परन्तु साधन बहुत सीमित थे। इसीलिए सरकार ने विकास योजना बनाने से पूर्व प्राथमिकताएँ निर्धारित कर लीं। सन् १९५० में आयोजना कमीशन की स्थापना हुई जिसने १९५१ में प्रथम पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा तैयार की।

प्रथम पंचवर्षीय योजना का उद्देश्य विकास न होकर, देश में भावी विकास की नींव रखना है; उन मूल आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर कदम उठाना है, जिनके बिना देश के लिए विकास-पथ पर आगे बढ़ना ही असम्भव है। सामान्य जनता पर तो उन विशाल बहु-उद्देश्यीय और औद्योगिक योजनाओं का प्रभाव, जिनको पहली योजना में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, काफी समय बाद ही पड़ेगा। दरिद्रता, अज्ञान और रोग के शिकंजे में जकड़े इन देहातियों के लिए कोई ऐसा कदम उठाना अनिवार्य था जिसका प्रभाव उन पर शीघ्र और प्रत्यक्ष रूप में पड़े। इसी उद्देश्य को सामने रखकर आज से ३ वर्ष पूर्व बापू के जन्म दिवस २ अक्तूबर, १९५२ को भारत में सामुदायिक विकास कार्यक्रम का श्रीगणेश किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के गाँवों में बसे हुए देहातियों तक आज़ादी का प्रकाश ले जाना है, सात करोड़ परिवारों में जीने के अधिकार की लालसा पैदा करना है। यह कार्यक्रम भारतीय गाँवों में मूक क्रान्ति लाने के उद्देश्य से आरम्भ किया गया है।

२ अक्तूबर, १९५२ को भारत सरकार ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में ५५ सामुदायिक विकास योजना (प्रोजैक्ट) क्षेत्रों का उद्घाटन करके इस विकास कार्य का श्री गणेश किया। इन ५५ योजनाओं में २५,२६४ ग्राम थे जिनकी जनसंख्या १ करोड़ ६४ लाख थी। ये ५५ योजनाएँ परीक्षात्मक थीं और इनके फल पर ही भावी कार्यक्रम निर्धारित किया जाना था। इन ५५ क्षेत्रों में कार्य आरम्भ होने के कुछ दिन बाद ही एक बात तो प्रत्यक्ष हो गई कि जनता इस विकास कार्य में बहुत रुचि ले रही है और हर प्रकार का सहयोग देने के लिए तैयार है। सच तो यह है कि सरकार को जनता का सहयोग आशा से अधिक प्राप्त हुआ और लोगों ने इस कार्यक्रम का विस्तार करने की मांग की।

निम्न लिखित कार्यों को इन क्षेत्रों के विकास कार्यक्रम में प्राथमिकता दी गई थी—

(क) कृषि तथा उससे सम्बन्धित क्षेत्र—
  (१) बेकार पड़ी हुई ऊसर भूमि को खेती योग्य बनाना,
  (२) सिंचाई के साधनों का विस्तार,
  (३) अच्छे बीज, औज़ार और खाद का प्रचार; पशु-चिकित्सा का प्रबन्ध; भूमि परीक्षण और अनुसन्धान; कृषि-उपज के विक्रय का प्रबन्ध और ऋण सुविधा का विकास, और
  (४) आन्तरिक मीनाशयों का विकास; फलों और सब्ज़ियों की खेती को प्रोत्साहन।

(ख) संचार साधन– सड़कों की मरम्मत और नई सड़कों का निर्माण।

(ग) शिक्षा– निःशुल्क और अनिवार्य आरम्भिक शिक्षा का प्रबन्ध; हाई और मिडिल स्कूल खोलना; सामाजिक शिक्षा का प्रबन्ध और पुस्तकालयों की सुविधा।

(घ) स्वास्थ्य– गंदे पानी के लिए नालियों का प्रबन्ध; रोगियों के लिए डाक्टरी सहायता और प्रसूतिका-केन्द्रों की स्थापना।

(ङ) प्रशिक्षण– दस्तकारों, किसानों, विस्तार-सेवकों, निरीक्षकों, स्वास्थ्य-सेवकों और विकास कार्य में भाग लेने वाले अन्य कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण का प्रबन्ध।

(च) बेकारी दूर करने के लिए कुटीर और छोटे उद्योगों की स्थापना, उत्पादन का आयोजित वितरण; व्यापार तथा कल्याणकारी सेवाओं का विस्तार।

(छ) नए स्वास्थ्यदायक घरों का निर्माण और पुराने घरों की मरम्मत।

(ज) समाजकल्याण—स्थानीय खेल-कूद प्रतियोगिताओं और मेलों की व्यवस्था, सामुदायिक

मनोरंजन का प्रबन्ध।

(झ) सहकारी समितियों की स्थापना।

सरकार की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह अकेले इतने विस्तृत क्षेत्र में विकास कार्य कर सकती। इस महान कार्य के लिए जनता का आर्थिक सहयोग अनिवार्य था। इस लिए अब तक जितना भी कार्य हुआ है उसमें जनता का योग भी उतना ही महत्वपूर्ण रहा है जितना सरकार का। दूसरे शब्दों में यह कार्यक्रम जनता का कार्यक्रम है, जिसमें सरकार सहयोग दे रही है। इस कार्यक्रम के लागू होने से पूर्व इस क्षेत्र में जो भी कार्य हुआ था वह सरकारी कार्यक्रम था, जिसमें जनता से सहयोग की मांग की गई थी।

आरम्भिक सफलता मिलने के पश्चात् इस विकास कार्य का विस्तार करना अनिवार्य हो गया। परन्तु सीमित साधनों को देखते हुए अन्य क्षेत्रों में भी उतना बहुमुखी विकास करना कठिन था, जितना आरम्भिक ५५ योजना क्षेत्रों में करने का प्रोग्राम था। इस लिए सरकार ने निश्चय किया कि सामुदायिक विकास योजनाओं जैसा व्यापक विकास कार्य न करते हुए, अन्य क्षेत्रों में उससे कम व्यापक विकास कार्य आरम्भ कर दिया जाए। इस कम व्यापक विकास कार्य को राष्ट्रीय विस्तार सेवा का नाम दिया गया। यह भी निर्णय किया गया कि जिन राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों का विकास सन्तोषजनक होगा उनको आगे चलकर सामुदायिक विकास खण्डों में परिणत कर दिया जाएगा। एक राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्ड के विकास पर तीन वर्षों में सरकार ७½ लाख रुपए खर्च करती है और सामुदायिक विकास खण्ड पर लगभग १५ लाख रुपए खर्च होते हैं।

अक्तूबर १९५२ से सरकार समय-समय पर नए सामुदायिक विकास योजना-क्षेत्रों और राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों का विस्तार करती रही है। प्रथम पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य मार्च १९५६ तक, १,२०० विकास खण्डों की स्थापना करके देश की एक चौथाई ग्रामीण जन संख्या को इस विकास कार्य के अन्तर्गत लाना है। इन १,२०० खण्डों में १,२०,००० गाँव होंगे जिनकी जन संख्या लगभग ८ करोड़ होगी। इनमें से ७०० खण्डों का तो बहुमुखी विकास करने का निश्चय किया गया है, बाकी ५०० विस्तार सेवा के अन्तर्गत आएँगे।

अप्रैल १९५५ तक इस दिशा में हुई प्रगति इस इस प्रकार है—

प्रारंभिक वर्ष	क्षेत्रों या खण्डों की संख्या	गाँवों की संख्या	जन संख्या
सामुदायिक विकास खण्ड			
१९५२-५३	१६७	२५,२६४	१ करोड़ ६४ लाख
१९५३-५४	५३	७,६९३	४० लाख
विस्तार खण्ड			
१९५३-५४	२५९	३१,४३५	१ करोड़ ८७ लाख
१९५४-५५	२४२	२४,२००	१ करोड़ ६० लाख
१९५५-५६	१०७	१०,७००	७१ लाख
योग	८२८	९९,२९२	६ करोड़ २२ लाख

एक खण्ड = १०० गाँव (लगभग ६०-७० हज़ार जन संख्या)

एक योजना (प्रोजैक्ट) = ३ खण्ड

इस वर्ष अप्रैल में, १३२ विस्तार खण्डों को, जिनमें १३,२०० गाँव हैं और जिनकी जनसंख्या लगभग ८७ लाख है, सामुदायिक विकास खण्डों में परिणत कर दिया गया है।

अब तक दोनों विकास सेवाओं के अन्तर्गत, भारत के ५½ लाख गाँवों में से १ लाख गाँवों से अधिक में विकास कार्य आरम्भ हो चुका है। इन गाँवों की जन संख्या ६ करोड़ २० लाख है, जब कि भारत की कुल ग्रामीण जन संख्या ३१ करोड़ है। अतः इस समय, हर पाँच देहातियों में से एक इस योजना से लाभ उठा रहा है। विकास कार्य के अन्तर्गत आनेवाली जन संख्या में से आधी सामुदायिक कार्यक्रम के अन्तर्गत आती है और आधी विस्तार सेवा-कार्यक्रम के अन्तर्गत। दोनों सेवाओं का धीरे-धीरे विस्तार किया जाएगा और द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्त तक सारा ग्रामीण भारत इन की परिधि में आ जाएगा।

सामुदायिक कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य जनता की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाना है ताकि अपनी दशा सुधारने के लिए वह स्वयं कार्य-क्षेत्र में जुट जाए। इस मानसिक परिवर्तन के बाह्य द्योतक हैं वे कार्य, जो जनता ने स्वयं किए हैं।

कृषि के क्षेत्र में सन् ५४ के अन्त तक किसानों में लगभग १,२०,००० टन उर्वरक, ४४,००० टन बीज और एक लाख अच्छे औज़ार वितरित किए जा चुके थे। इनके अतिरिक्त लगभग ४ लाख एकड़ बेकार पड़ी हुई भूमि को खेती योग्य बनाया गया और लगभग ७½ लाख एकड़ भूमि में सिंचाई का प्रबन्ध किया गया। लगभग ८,५०० नए कुएँ खोदे गए और १५,५०० पुराने कुओं की मरम्मत की जा चुकी है।

[शेष पृष्ठ २७ पर]

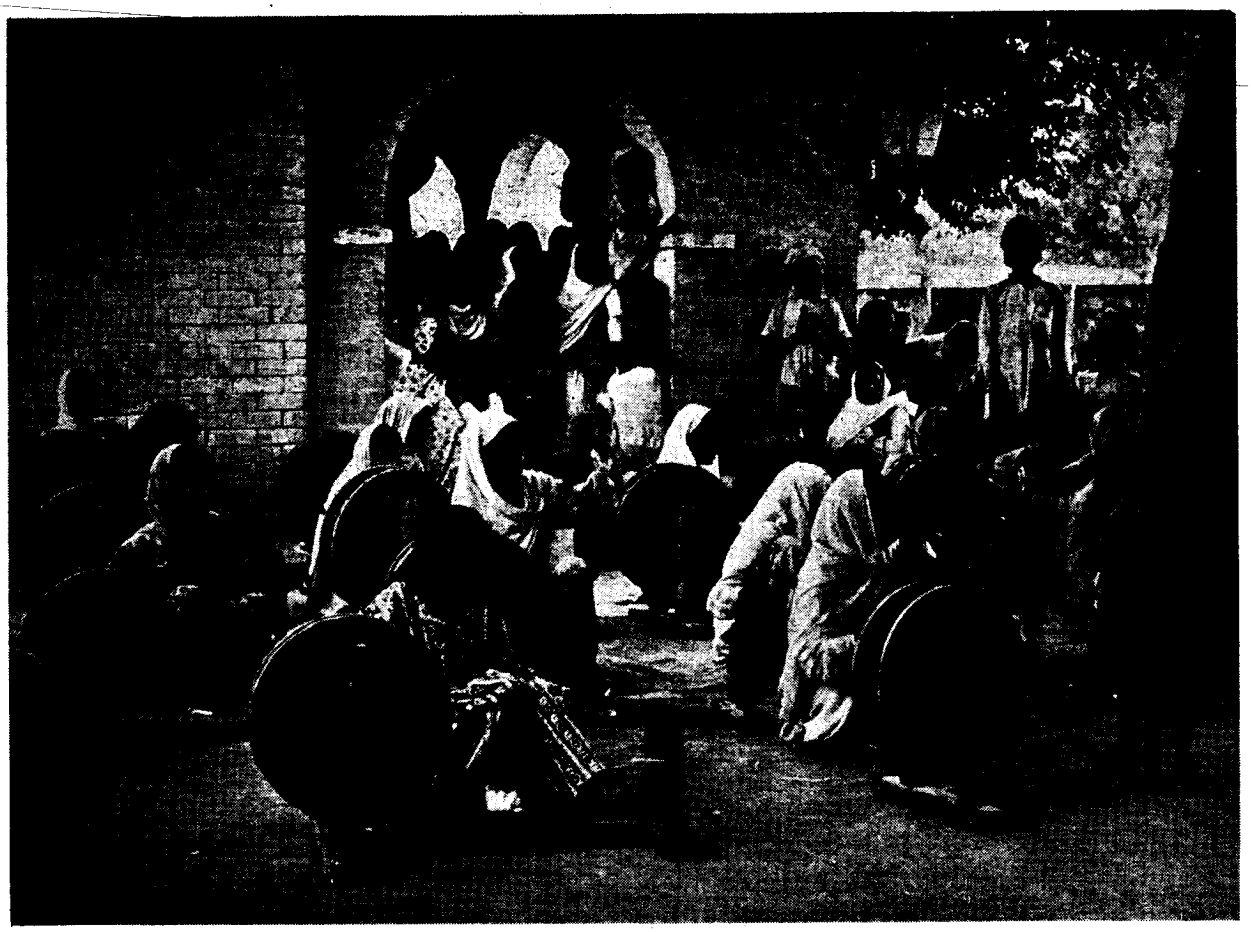

तिरंजण

प्राणनाथ सेठ

यदि आप को कभी पंजाब के देहात में जाने का अवसर मिला है तो आप ने तिरंजण का नाम भी अवश्य सुना होगा। तिरंजण पंजाब की ग्रामीण स्त्रियों का 'क्लब' है, ऐसा क्लब जहाँ सहेलियाँ साथ बैठ कर घंटों चर्खा कातती हैं, मीठे-मीठे गीत गाती हैं, एक दूसरे के सुख-दुख की बातें सुनती हैं। तिरंजण में जाने के लिए सब स्त्रियाँ, बूढ़ी हों चाहे जवान, सदा उत्सुक रहती है। जैसे—

हथ पूणियां ढाक ते चर्खा,
लम्मी गली कत्तन चली।

(हाथ में पूणियाँ लिए और कन्धे पर चर्खा उठाए, गोरी लम्बी गली को चर्खा कातने जा रही है)।

चर्खा पंजाब के ग्रामीण जीवन का अभिन्न अंग रहा है। इन दिनों तो सस्ता मशीनी कपड़ा आ जाने के कारण चर्खे का महत्व कुछ कम होता जा रहा है, परन्तु आज से कुछ वर्ष पूर्व प्रत्येक घर में माएँ, बहनें और बेटियाँ, सब चर्खा काता करती थीं। जिस तरह घर-गृहस्थी के लिए अन्न जुटाना पुरुषों का काम था, उसी प्रकार समूचे परिवार के लिए कपड़ा तैयार करने का दायित्व स्त्रियों का था। अपने दहेज़ के लिए लड़कियाँ स्वयं कपड़ा तैयार करती थीं। पति भी ऐसी पत्नी पसन्द करते थे जो अच्छा सूत कात सके और सुन्दर कपड़ा बुन सके। पंजाब के प्रसिद्ध सूफ़ी कवि हुसैन ने अपनी आत्मा का उस लड़की से मुकाबिला किया है जो आयु पर्यन्त कुमारी रही क्योंकि वह परम्परागत प्रथा के अनुसार अपने भावी पति के लिए सूत न कात पाई। यह है चर्खे का महत्व, पंजाबी जीवन में।

इस लिए ज्यों ही बच्ची जवानी की ओर कदम उठाती

है, वह तिरंजण में सम्मिलित होकर सहेलियों के साथ बैठ कर नियमपूर्वक चर्खा कातने लगती है। तिरंजण का आयोजन कहीं एक निश्चित स्थान पर नहीं होता। यदि आज यह जमघट एक सहेली के यहाँ लगा है तो कल दूसरी के यहाँ। लड़कियाँ अपने-अपने घर से पूणियाँ और चर्खे लेकर आ जाती हैं। यहाँ कातने की प्रतियोगिता होती है, जो कई-कई घंटे जारी रहती है। माताएँ अपनी बेटियों को इस तरह कातते हुए देख कर खुश होती हैं। यदि किसी की बेटी ब्याही जाए तो तिरंजण को अपनी बेटी से खाली देख कर माँ की आँखें भर आती हैं—

तिरंजणा दे विच कत्तन सहेलियां,
गुडीयां नां गुडीयां जोड,
हुण क्यों मां रोवे,
धी नू सौहरे तोर।

(तिरंजण में सहेलियों को चर्खा कातते हुए देख कर माँ की आँखों से आँसू बह निकले, उस की बेटी चर्खा कातनेवालियों में न थी। वह तो सुसराल जा चुकी थी)।

तिरंजण की बैठक की एक प्रधान भी होती है। प्रायः यह सम्मान उसी सहेली को दिया जाता है जिसके घर कातनेवालियों का झमघट लगा हो। वह एक तरफ हटकर बैठ जाती है। पूणियाँ सब की सब उस के सामने ढेर के रूप में पड़ी होती हैं, वह उन्हें उठा-उठा कर सब को देती जाती है। हर एक लड़की अपने साथ कुछ न कुछ खाने के लिए भी पल्ले में बाँध कर लाती है। गर्मियों में यह भुनी हुई मक्का होती है और सर्दियों में तिल, चावल, गुड़ इत्यादि। हाथ की पूणी खत्म होते ही, ख़ाली हाथ कुछ चीज मुँह में डालने के लिए बढ़ता है। लड़कियाँ जो कुछ घर से खाने को लाती हैं, वह भी तिरंजण की सांझी सम्पत्ति बन जाता है, सब मिल-जुल कर उसे खाती हैं।

तिरंजण एक विचित्र संस्था है। तिरंजण की सहेलियाँ हर वर्ष बदलती रहती है। हर साल गाँव की कुछ लड़कियाँ ब्याही जाती हैं, उनका स्थान नई जवान होने वाली लड़कियाँ ले लेती हैं या नई आनेवाली बहुएँ। यह संस्था निरन्तर चलती रहती है, उसी उत्साह के साथ, उसी चाव के साथ। इसी लिए तो एक लोक-कवि ने कहा है—

बेड़ी पूर तिरंजण दीयां कुडियां,
सबब नाल होण कट्ठियां।

(तिरंजण की लड़कियाँ किसी सबब से ही इकट्ठी होती हैं)।

और जब इकट्ठी होती है तो मीठे-मीठे गीत सुरभरे गले के साथ गाए जाते हैं। गीतों में अपने दिल की सब बातें कह दी जाती हैं, मेरी सास बड़ी ज़ालिम है, मुझ से कड़ा परिश्रम कराती है, मेरा ससुर कोई काम-धन्धा नहीं करता। बाबुल, मेरे लिये सुन्दर वर ढूँढ़ना। मेरा ब्याह कहीं दूर मत करना। फिर इन्हीं गीतों में 'माही,' अपने प्रियतम के प्रति सब शिकवे शिकायतें कर दी जाती हैं। वह जालिम 'साहब' से छुट्टी लेकर घर नहीं आता। फौज की नौकरी भी भला कोई नौकरी है। नई ब्याही 'नार' घर पर हो और प्रियतम परदेस।

इन गीतों में कितना मधु होता है, इस का अनुमान इन पंक्तियों से लगाइए। देखिए, कितना आकर्षण है इन गीतों में—

जोगी उतर पहाड़ों आया,
चर्खे दे गीत सुनके।

(चर्खे के गीत सुन कर जोगी पहाड़ों से उतर आया)।

पंजाब की ग्राम्य-बालाएँ, चर्खे के चुनाव पर काफी ध्यान देती हैं। मेरा चर्खा ऐसा नहीं होना चाहिए जो दूसरों से घटिया हो। वह रंगदार हो, हल्का हो और देखने-भालने में बहुत सुन्दर। नहीं तो अपनी सहेलियों के कटाक्षों के बोझ तले मैं दब जाऊँगी। इस लिए यह मांग होती है—

चर्खा मेरा किक्कर दा,
तू टाहली दा बणवा दे,
मेरे नाल दीयां कत्त के गईयां,
मंथों कत्तिया न जावे।
चीकू चीकू करदा रहंदा,
नित्त मेरी नींद गवावे।
अग्ग लगे चर्खे नूं,
नित्त मेरे हड्डां नू खावे।

(मेरा चर्खा कीकर की लकड़ी का है। यह मुझे नहीं चाहिये। मुझे टाहली की लकड़ी का नया चर्खा बनवा दो। मेरे साथ की लड़कियाँ कात कर चली गईं। मुझसे यह नहीं काता जाता। यह चीकू-चीकू करता रहता है और रोज़ मेरी नींद खराब करता है। आग लगे इस चर्खे को, यह प्रति दिन मेरे शरीर को दुख देता रहता है)।

चर्खा कातते-कातते गोरी को प्रियतम का ध्यान आ गया। प्रियतम की याद आने पर उसकी मद भरी आँखों में नींद छा जाती है। और वह 'कतणी' (पूणियों वाल टोकरी) पर ही लुढ़क जाती है—

जदों चेता माही दा आया,
कतणी ते लुढक पई।

(जब माही का ध्यान आया तो कतणी पर लुढ़क गई)।

इस उनींदी हालत में न जाने कैसे-कैसे भयानक ख्याल आने लगते हैं—

मेरी कतणी फराटे मारे,
पूणियां दे सप बन गए।

(मेरी कतणी भाग रही है। पूणियों के सांप बन गए)।

नई ब्याही दुलहन को प्रियतम ने तिरंजण में चर्खा कातने के लिए तो भेज दिया। परन्तु स्वयं बार-बार तिरंजण के चक्कर काटने शुरू कर दिए। यह भी कोई तरीका है। उलाहना देते हुए गोरी कहती है—

चौथा माही दा फेरा,
पूणियां में तिन्न कत्तियां।

(यह मेरे माही का चौथा फेरा है। मैंने तो अभी तीन ही पूणियां काती हैं)।

तिरंजण की भोली लड़कियों के लिए चर्खा एक बेजान चीज़ नहीं, उसके साथ बात-चीत हो सकती है, परामर्श किया जा सकता है। चर्खा उत्तर देता है। परामर्श देता है। एक प्रसिद्ध लोक-गीत में एक लड़की चर्खे से पूछती है—

घूँ, घूँ, घूँ, ओ मेरे चर्खे ?

भला यह तो बताओ कि मैं लाल पूणी कातूं या नहीं। कातो, ए लड़की, कातो।

मेरी ससुराल बहुत दूर है, मैं वहां जा कर रहूँ या न रहूँ ? रहो, ए लड़की, रहो।

मेरी दुखभरी कहानी बहुत लम्बी है।

मैं इसे सुनाऊँ या न सुनाऊँ ? सुनाओ ए लड़की सुनाओ।

मेरा पति नाबालिग है, मैं इसके साथ रहूँ या न रहूँ ? रहो, ए लड़की, रहो।

चर्खा काफी समझदार है। वह अपनी मालकिन को उचित परामर्श ही देता है !

परन्तु इस मशीनी युग में चर्खे की मीठी धुनें और तिरंजण के झमघट प्रायः लोप होते जा रहे हैं। पंजाब के ग्राम्य जीवन पर सस्ते मशीनी कपड़े का यह अभिशाप बुरी तरह छाता जा रहा है। इसी हालत को देख कर एक लोक कवि कह उठा—

सूने पये नी तिरंजण अज तेरे,
चर्खे दी घूक न सुने।

(आज पंजाब के 'तिरंजण' सूने पड़े हैं। चर्खे की घूक सुनाई नहीं देती)।

★ ★ ★

भारत में सामुदायिक विकास कार्यक्रम—[पृष्ठ २४ का शेषांश]

शिक्षा के क्षेत्र में ५,५०० से भी अधिक स्कूल खोले गए और लगभग १५,५०० प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गई। लगभग १५,००० नई सहकारी समितियाँ बनाई गईं और २६,००० सामुदायिक केन्द्रों की स्थापना की गई। १,१४५ मील लम्बी पक्की सड़कें बनाई गईं और लगभग १२,००० मील लम्बी कच्ची सड़कों का निर्माण किया गया। ११,००० से अधिक नए मकान बनाए गए और ६६,४६६ पुराने मकानों की मरम्मत की गई।

इस सब कामों को पूर्ति में जनता का बहुत बड़ा हाथ रहा है। सन १६५४ के अन्त तक भूमि, नकदी और श्रम के रूप में जनता का योगदान लगभग ७.५ करोड़ रुपए था जबकि सरकार ने लगभग साढ़े तेरह करोड़ रुपए व्यय किए थे। इस प्रकार सारे कार्यक्रम में जनता ने सरकार से आधी पूंजी लगाई। भारत के गाँवों की दरिद्रता किसी से छिपी नहीं है। किसानों के पास न तो फालतू भूमि है और न ही फालतू पूंजी। फिर भी जनता के पास जो कुछ भी था उस को ही लेकर जनता ने विकास कार्य में जुट कर इस बात का सबूत दिया है कि सामुदायिक विकास कार्यक्रम में उनका दृढ़ विश्वास है।

★ ★ ★

इतिहास के पृष्ठ

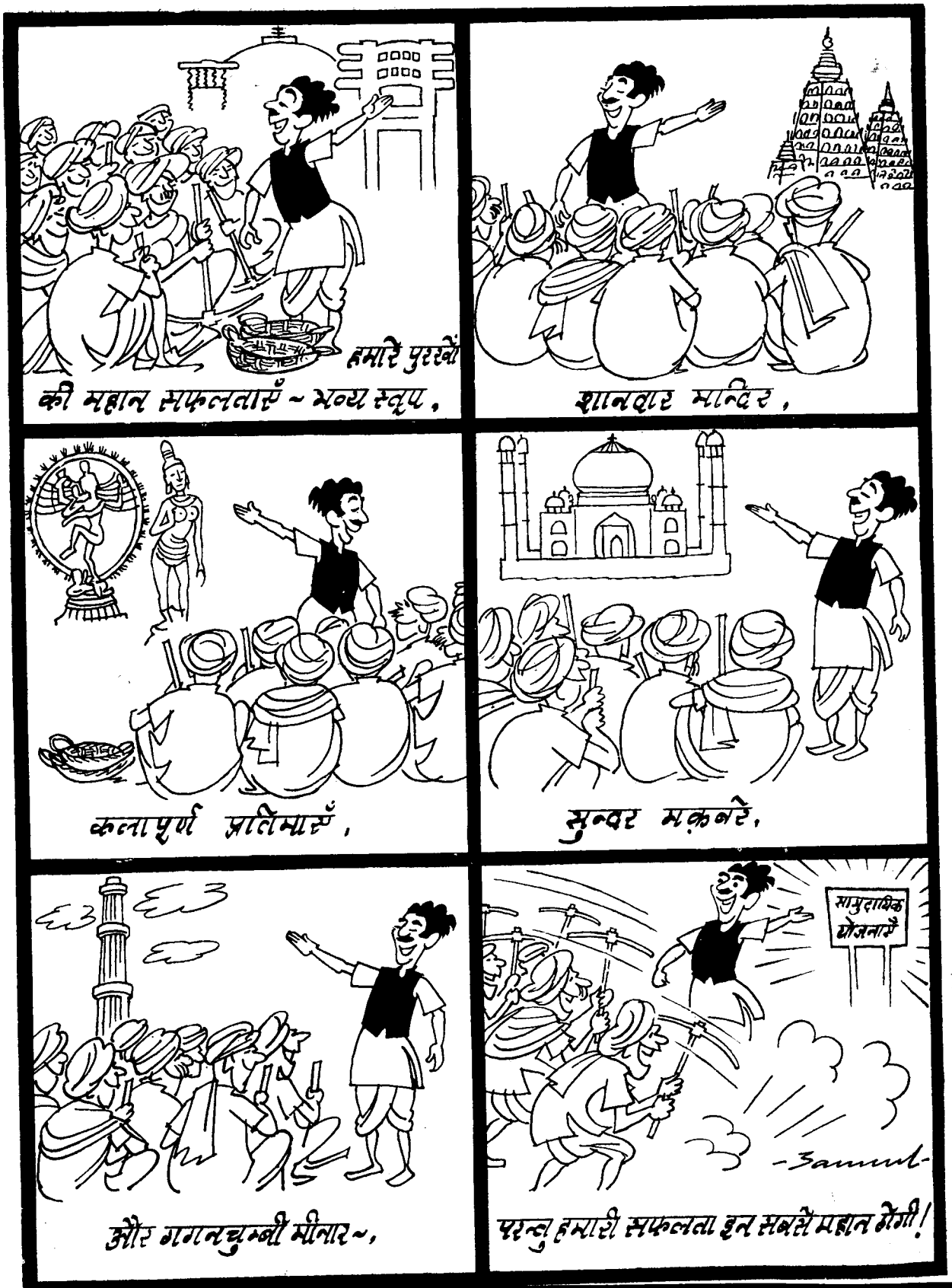
हमारे पुरखों की महान सफलताएँ ~ भव्य स्तूप,
शानदार मन्दिर,
कलापूर्ण प्रतिमाएँ,
सुन्दर मक़बरे,
और गगनचुम्बी मीनार ~,
सामुदायिक योजनाएँ
परन्तु हमारी सफलता इन सबसे महान होगी!
-Samuel-

किसानों की इस रथयात्रा ने एक गाँव से दूसरे गाँव का भ्रमण किया

हमारी रथयात्रा

डी० सी० दुबे और पी० एस० लाम्बा

सामुदायिक योजना कार्यक्रम जनता का अपना कार्यक्रम है।

इसको सफलतापूर्वक चलाने के लिए जागृत लोकमत आवश्यक है। इस कारण इस रोचक कार्य में लगे विस्तार कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे जन संपर्क को बढ़ाएँ और उसे बनाए रखने के लिए उचित तरीके ढूंढे और उन्हें अपनावें। हमारा यह विश्वास है कि तर्कसंगत लोकमत के समर्थन के बिना सामुदायिक योजना प्रशासन अपने दायित्वों को पूरी तरह नहीं निभा सकता।

हम लोग भोपाल राज्य में गत ३ वर्षों से इस कार्यक्रम पर काम कर रहे हैं। इन तीन घटनापूर्ण वर्षों में हमें सफलताएँ भी मिलीं और असफलताएँ भी। हमने इन सफलताओं और असफलताओं के अनुभवों का सदुपयोग करने का निश्चय किया। हमने सोचा कि इस कार्यक्रम के उद्देश्यों और सफलताओं से दूसरे गाँववालों को अवगत कराने के लिए उन गाँववालों का उपयोग किया जाए जहाँ हमें आशातीत सफलता मिली थी।

इस उद्देश्य को सामने रखते हुए हमने सामुदायिक योजना खण्डों के दस-दस गाँवों में से दो-दो किसान चुने और उन्हें बैलगाड़ियों पर एक सप्ताह की 'रथयात्रा' के लिए तैयार किया। 'रथयात्रा' का मार्ग इस प्रकार निश्चित किया कि यथासम्भव अपेक्षाकृत कम उन्नत गाँव उसकी परिधि में आ जाएँ। इस रथयात्रा में सम्मिलित होनेवाले प्रत्येक सदस्य को उसकी वैयक्तिक एवं गाँव की सामूहिक उन्नति से, जो इस कार्यक्रम के श्रीगणेश के बाद उन्होंने प्राप्त की थी, भली भाँति परिचित कराया गया। सफलता की इन कहानियों को अधिक रोचक और विश्वसनीय बनाने के लिए उन्हें उनकी सफलताओं—स्कूलों, सड़कों और उर्वरकों के सफल प्रदर्शनों आदि के बड़े-बड़े चित्र, उपयुक्त तालिकाएँ और पोस्टर दिए गए। अपने खेतों और ग्रामोद्योग के श्रेष्ठ उत्पादनों के नमूने

साथ ले चलने के लिए प्रोत्साहित किया गया। अपनी बात को सुन्दर ढंग से व्यक्त करने के लिए उन्हें सिनेमा स्लाईड और प्रोजैक्टर आदि भी उपलब्ध कराए गए। अपने ग्रामीण भाइयों को एकता और अपनी सहायता आप करके प्रगति करने का सन्देश पहुँचाने के उत्साह में इस रथयात्रा के सदस्यों ने बढ़िया-बढ़िया बैलगाड़ियाँ चुनीं और उन्हें खूब सजाया। मार्ग के ग्रामवासियों को इसकी सूचना पहले से ही मिल चुकी थी और उन्होंने रथयात्रा के आदर-सत्कार में कोई कसर न उठा रखी। ग्रामीणों में उत्साह जगाने के लिए रथयात्रा के आगे-आगे एक सिनेमा-गाड़ी रहती थी। हमारे देशवासियों में एक स्वाभाविक गुण है कि वे स्वयं कष्ट उठा कर भी दूसरों को आराम पहुँचाने के लिए लालायित रहते हैं। इस यात्रा में इस स्वाभाविक गुण का अत्यधिक परिचय मिला।

इस प्रकार २० अप्रैल, १९५५ को सामुदायिक योजना क्षेत्र के ३ खण्डों में ३ दलों ने अपनी यात्रा आरम्भ की। इस कार्य में करीब ३० उन्नत गाँवों ने सक्रिय भाग लिया। इन तीनों दलों में गाँवों के ६० सम्मानित प्रतिनिधि थे। ये लोग ७ दिन तक बैलगाड़ियों पर गाँव-गाँव घूमे और गाँव के लोगों में एकता और अपनी सहायता आप करने के उच्चादर्श का प्रचार किया।

इन लोगों ने अपने गाँवों में प्राप्त सफलता की कहानियाँ अपने उन भाइयों को सुनाईं। कार्यक्रम की उपयोगिता को प्रतिष्ठित करने में इससे बहुत सहायता मिली।

३० बैलगाड़ियों और ६० ग्रामीणों के इस दल ने ८३ गाँवों का दौरा किया। इस दल में भाग लेनेवाले किसानों ने गाँवों की ६० सभाओं में भाषण दिए जिन्हें लगभग २०,००० ग्रामीण भाइयों ने सुना। इस प्रकार अपने गाँव का विकास करने के इस आन्दोलन के प्रति जनता में सहानुभूति की भावना जगाई गई। दल के सदस्यों तथा अन्य गाँववालों में ऐसा खुले दिल से विचार-विनिमय और तर्क-वितर्क देखने में आया जो ग्राम-सेवकों और खण्ड विकास अधिकारियों द्वारा आयोजित सरकारी सभाओं में कभी भी नहीं देखा गया था। इस प्रकार विस्तार कार्यकर्ताओं द्वारा गाँववालों का सहयोग (मानसिक एवं शारीरिक) प्राप्त करने का कठिनतम कार्य इन लोगों ने बड़ी सफलता से सम्पन्न किया।

गाँववालों ने जिस उत्साह से हमारा स्वागत किया

रथयात्रा के सदस्यों का गाँव वालों से विचार-विनिमय

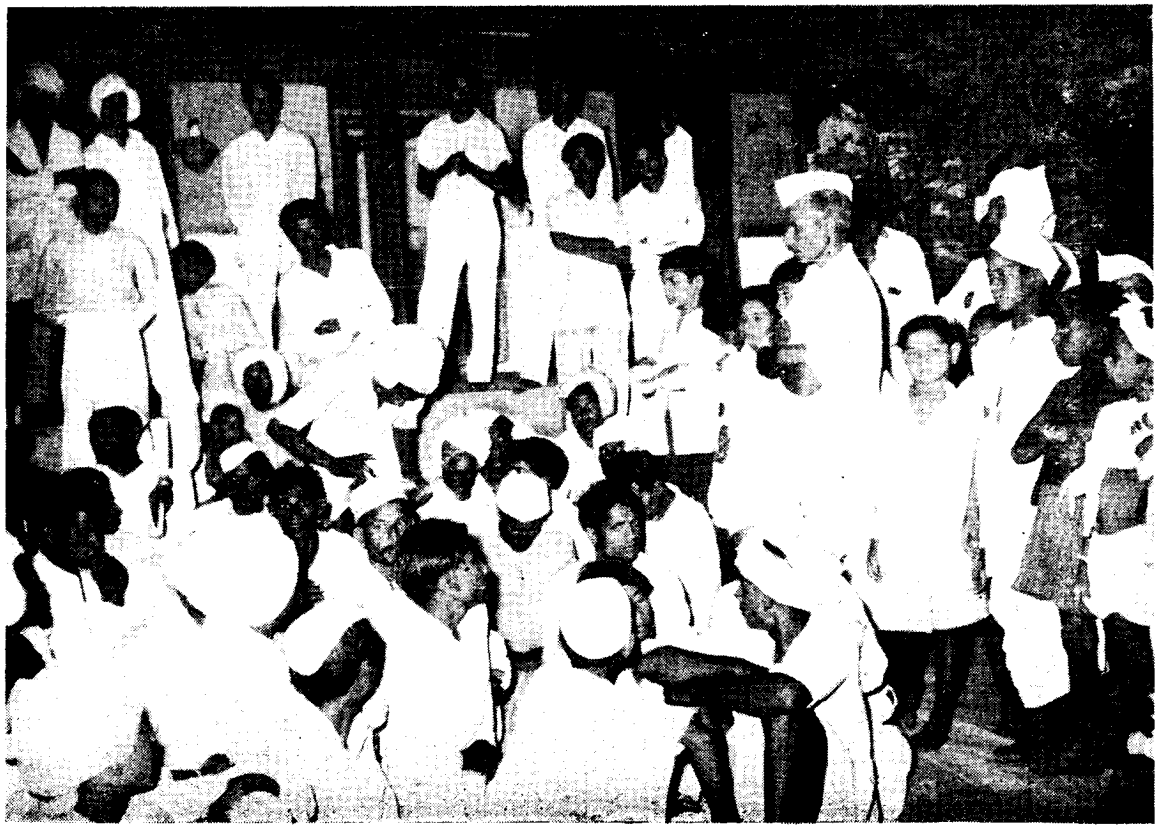

यात्रा की समाप्ति पर गांव को वापसी

उससे हमें भविष्य की वह झाँकी भी दिखाई दी जब अपेक्षाकृत अल्पविकसित पड़ोसियों की सहायता करने का पूरा दायित्व आज के विस्तार कार्यकर्ताओं की बजाए ग्रामीण स्वयं उठाएँगे।

अधिकांश गाँवों में दल का स्वागत ढोल पीट कर और स्त्रियों द्वारा लोक-गीतों के गायन से किया गया। दल के सदस्यों के तिलक लगाए गए और उन्हें हार पहनाए गए। कहीं-कहीं तो हवा में गोलियाँ तक चलाई गईं। लम्बी परन्तु मनोरंजक सभाओं, खुले दिल से विचार-विनिमय और हार्दिक स्वागत से हमें विश्वास हो गया कि अपने साथी किसानों के समर्थन और विचार-विनिमय द्वारा गाँववालों ने हमारे विचारों को कितनी शी ता से हृदयंगम किया है।

परन्तु यह तो आधी ही कहानी है। ग्राम-स्तर कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र में ये तीनों दल फिर आन मिले और यहाँ सब की एक गोष्ठी हुई। यह गोष्ठी भी रथयात्रा से किसी तरह कम महत्वपूर्ण न थी। प्रशिक्षण केन्द्र में ये लोग ३ दिन ठहरे। यहाँ कृषि के सुधरे हुए तरीकों के १२ प्रदर्शन किए गए। तीनों दिन प्रथमार्ध में प्रदर्शन दिखाए जाते थे और द्वितीयार्ध में समूह वाद-विवाद, अपनी-अपनी प्रतिक्रियाओं के बारे में विचार-विनिमय होता था और भावी प्रोग्राम को अन्तिम रूप दिया जाता था।

सफलताओं के लेखा-जोखा करने का अभी समय नहीं आया। परन्तु ३ दिन की इस गोष्ठी में किए गए निर्णयों से एक झलक तो मिल ही सकती है।

सभी ने एकमत से इस बात को स्वीकार किया कि इस रथयात्रा से उन्हें बहुत लाभ पहुँचा और शैक्षणिक दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण है। इससे उन गाँवों को बहुत लाभ पहुँचा जिन की इन्होंने यात्रा की, क्योंकि इससे उन्हें ज्ञात हुआ कि उन से मिलती-जुलती परिस्थितियों में अन्य ग्रामीण भाइयों ने किस प्रकार उन्नति की है। उन्होंने इस बात की भी सिफ़ारिश की कि वर्ष में दो बार ऐसी रथयात्राओं का आयोजन किया जाए, फ़सल बोने और ओसाने के तुरन्त बाद। गोष्ठी ने राज्य सरकार से राष्ट्रीय विस्तार सेवा खण्डों में भी इस प्रकार के दलों का संगठन करने की सिफ़ारिश की इसको अधिक आकर्षक और उपयोगी बनाने के लिए इसके साथ कृषि के सुधरे हुए तरीकों तथा सुधरे औज़ारों

का प्रदर्शन एवं उन औज़ारों के उपयुक्त नमूने रखने का सुझाव भी रखा गया। यात्रा की अवधि के बारे में तय पाया कि ८ दिन पर्याप्त होंगे। इन आठ दिन में ६ दिन यात्रा की जाए और दो दिन गोष्ठी अथवा समूह वाद-विवाद किया जाएगा।

भावी कार्यक्रम के बारे में यह निर्णय हुआ कि प्रत्येक गाँव में छोटे-छोटे समूहों का संगठन किया जाए। ऐसे समूहों में ६ से लेकर १० तक सदस्य रहेंगे। इनका नाम 'अग्रगामी दल' या विकासशील किसान समूह रखा जाए। यह भी निश्चय किया कि दल का प्रत्येक सदस्य ११ प्रस्तावित कार्यों में से कम से कम ८ कार्य स्वयं करे, और क्लब के अन्य सदस्यों को ६ महीने के भीतर कम से कम ४ कार्य करने के लिए राज़ी करे। अन्त में यह भी सुझाव रखा गया कि प्रत्येक सदस्य को अन्य सदस्यों की गति-विधि की जानकारी रहनी चाहिए। यह भी निर्णय किया गया कि सफलता का मूल्यांकन करने और इन सदस्यों के ६ महीनों के अनुभव के प्रकाश में भावी कार्यक्रम की रूप-रेखा स्थिर करने के लिए ६ महीने बाद एक बैठक बुलाई जाए।

इस प्रकार १० दिन के व्यस्त और मनोरंजक कार्यक्रम के उपरान्त हमारी रथयात्रा समाप्त हुई।

★ ★ ★

फतेहपुर बेरी में महिला शिविर — [पृष्ठ २१ का शेषांश]

गई है। हम रोज़ सुबह ६ बजे से ११ बजे तक इनके घरों की सफाई करने जाती हैं। गाँव में कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें गाँव की जागृति में अपनी स्वार्थ सिद्धि नहीं दिखती। उनमें से किसी ने इन स्त्रियों से यह कह दिया है कि भारत सेवक समाज की ओर से यह जो महिलाएँ आती हैं उन्हें सरकार से यहाँ घरों में सफ़ाई करने के लिए पैसे मिलते हैं। बस जब हम इनके घरों की सफाई करने जाते हैं तो इनमें से कुछ तो सहयोग देने के बदले खड़ी-खड़ी तमाशा देखती हैं। पहले तो यह हमें अपने घरों में भी नहीं घुसने देती थीं। उनका यह ख्याल था कि शायद हम इनकी तलाशी लेने आई हैं। इनकी धन-दौलत का पता लगा कर कुछ उठा कर ले जाएँगी। सच मानिए एक-एक घर से मनों कूड़ा निकला। महीनों से न तो धूल झाड़ी गई थी न जाले ही साफ किए गए थे। अगर इन लोगों को पता चल जाए कि हम लोग अभी अविवाहिता हैं तो हैरान हो जाएँगी और हमारे बारे में सौ-सौ बातें कल्पना करने लगेंगी।"

गीता बोली—"हाँ मुझसे पूछ भी रही थीं कि तुम लोग अपने आदमियों से बिना पूछे क्या इसी तरह गाँव-गाँव डोलती रहती हो। तुम अपने मोड़ा-मोड़ी (बाल-बच्चों) को किनके धोरे (पास) छोड़ आई हो?"

सीता बोला—"गाँव में रोग और गंदगी तो अपने आप फैलेगी क्योंकि घरों के आँगन में ये लोग ढोर बाँधते हैं। उनके साँस, गोबर, मूत आदि की सारी बास घर में भर जाती है। घरों में न खिड़की है, न ये लोग दरवाजे खोल कर सोते हैं। सोते समय मच्छरों से बचने के लिए मुँह ढँक लेते हैं फिर भला बताओ इनको साफ़ हवा कैसे मिले? रोज़ दोपहर को बड़ी बहन जी इन्हें यही समझाती हैं कि कुदरत की देन साफ़ हवा, पानी, और धूप तो बिना पैसे के मिलती हैं उनका तो ठीक उपयोग करो। गाँव में तीन-चार बच्चे तो मोतीझरा से पड़े हैं; ६ बच्चों को मरोड़ लगे हैं, दो बच्चों को सूखे का रोग हो रहा है और जुकाम, खाँसी तथा आँखें दुखने का रोग तो कई बच्चों को है।"

मैंने कहा—"हाँ दशा तो गाँवों की खराब ही है। इसी लिए तो हमारी सरकार ने गाँवों की दशा सुधारने के लिए कदम उठाया है। जादू का डंडा तो है नहीं, जो घुमा दिया और सब ठीक हो जाए। बरसों से जो व्यक्ति अन्ध-विश्वास और सामाजिक कुरीतियों के शिकार हैं उन्हें नए तरीके अपनाते कुछ समय तो लगेगा ही। मनोरंजन का कुछ विशेष साधन न होने और अवकाश के समय कुछ उपयोगी धंधे की सुविधा न होने के कारण स्त्रियाँ का खाली समय निंदा, चुगली और लड़ने में बीतता है।

शिविर में आकर हमने लौटने की तैयारी की। शिविर की माता जी ने बड़े आग्रह से आम के पने का शरबत पिला कर हमें फिर आने की बार-बार याद दिला कर सप्रेम विदा किया। मैं रास्ते में गाँव वालों के अभावों को सोचती हुई अपने विचारों में खोई हुई थी कि माता जी (श्रीमती बजाज) ने पीठ पर हाथ धर कर कहा—"अरे तुम तो चौंक गईं। शायद पहली बार गाँव की समस्याओं को इतने पास से समझने का अवसर मिला है, तभी इतनी भावुक हो उठी हो। केवल दुखी होने से तो काम चलेगा नहीं। कुछ करो इनके लिए चंदा इकट्ठा करो, हाथ-पाँव, जिह्वा और लेखनी सब से इनकी सेवा करो।"

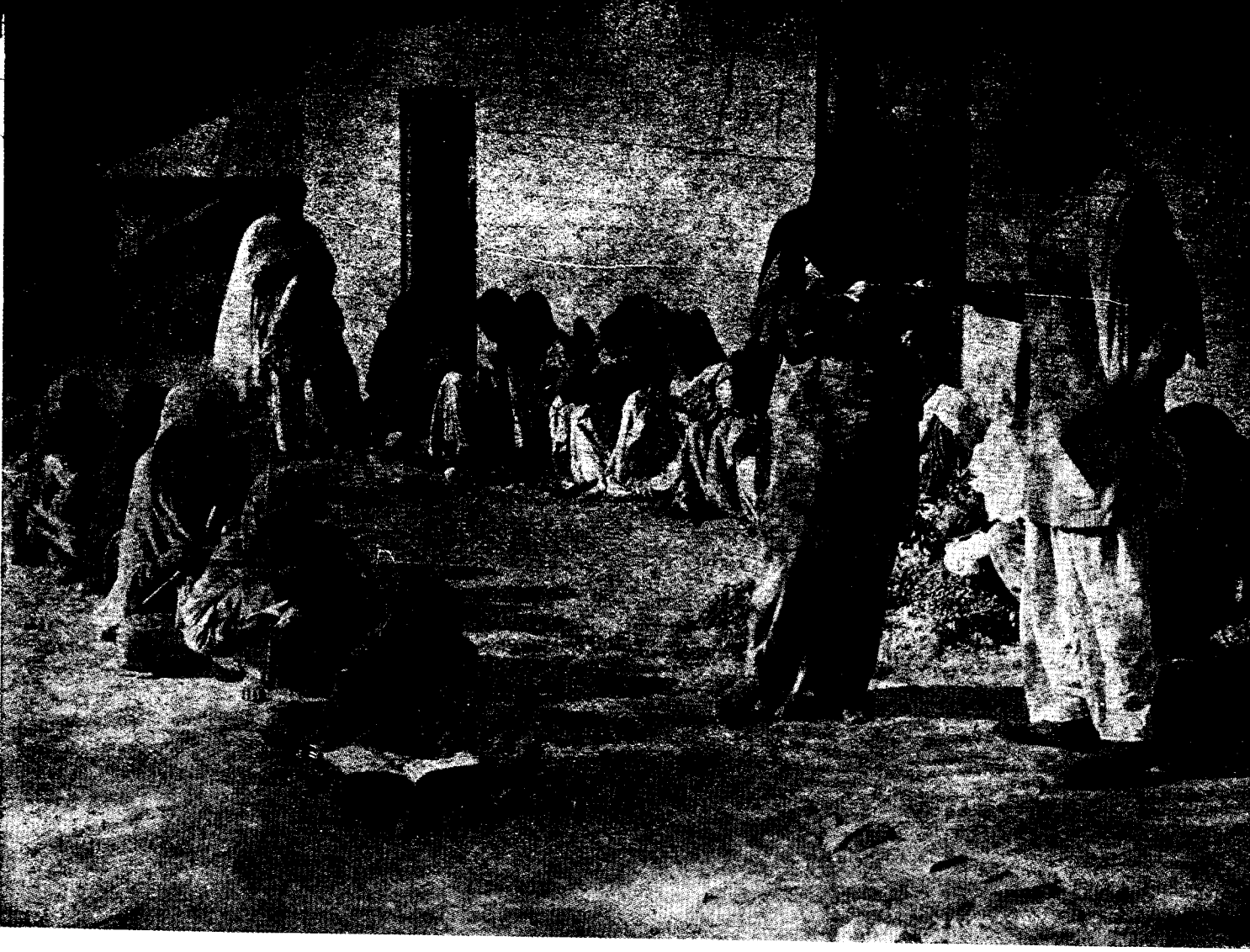

कुनिहार में महिलाओं का समाज शिक्षा केन्द्र

भारत की एकता का निर्माण

(सरदार वल्लभ भाई पटेल)

भारत की एकता के निर्माता सरदार पटेल के २७ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाषणों का यह संग्रह हाल ही में प्रकाशित हुआ है।

१५ अगस्त १९४७ को जब भारत स्वाधीन हुआ, तब भारत में ९ प्रान्तों के अतिरिक्त ५८४ रियासतें थीं। इन ५८४ रियासतों में केवल हैदराबाद, काश्मीर और मैसूर यही ३ रियासतें ऐसी थीं, जो आकार और आबादी के लिहाज़ से पृथक् राज्यों का रूप धारण कर सकती थीं। अधिकांश रियासतें बहुत छोटी थीं और २०२ रियासत तो ऐसी थीं, जिनका क्षेत्रफल १० वर्गमील से अधिक नहीं था। उस पर भी ये सब की सब रियासतें शासन की पृथक् इकाइयाँ बनी हुई थीं।

भारत के प्रथम उपप्रधान मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने दो वर्षों के भीतर ही सम्पूर्ण भारत को एक बना दिया। उक्त ५८४ रियासतों का ५,८८,००० वर्ग मील क्षेत्रफल और १० करोड़ के लगभग आबादी इस अल्प-काल ही में भारत के आन्तरिक भाग बन गए। उसी तरह, जिस तरह भारत के अन्य राज्य हैं। हैदराबाद, मैसूर और काश्मीर को पृथक्-पृथक् और अन्य कितनी ही रियासतों के संघ बनाकर उन्हें 'बी' श्रेणी के राज्य बना दिया गया। सैकड़ों छोटी-छोटी रियासतें आसपास के बड़े राज्यों में मिला दी गईं। परिणाम यह हुआ कि भारत भर में पूर्ण प्रजातन्त्र स्थापित हो गया और सन् १९५२ का निर्वाचन समूचे देश में बालिग़ मताधिकार के आधार पर सम्पन्न हुआ।

इस नवीन भारत की एकता के निर्माण में सरदार पटेल के इन २७ भाषणों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वाधीनता के पहले २½ वर्षों की भारतीय समस्याओं पर इन भाषणों में जो प्रकाश डाला गया है, उसका महत्त्व ऐतिहासिक है। ये भाषण देश के लिए चिरकाल तक प्रकाश स्तम्भ का काम देते रहेंगे।

इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक ग्रन्थ का मूल्य प्रचार के उद्देश्य से बहुत कम रक्खा गया है। पुस्तक में ३५० बड़े आकार के पृष्ठों के अतिरिक्त १६ पृष्ठ सरदार पटेल के सुन्दर चित्र और नवीन भारत का एक मानचित्र भी दिया गया है।

मूल्य : सजिल्द ५) रुपया

प्रकाशक :

पब्लिकेशन्स डिवीज़न,

ओल्ड सेक्रेटेरियट,

दिल्ली-८

Printed by the Albion Press, Kashmere Gate Delhi-6, and published on behalf of Community Projects Administration by the Publications Division, Delhi-8.